B. A Vth Semester Paper Code - A080501T (1)

Paper - Ist Economic Growth and Development

आर्थिक विकास का अर्थ एवं विशेषता बताइए।
[Write down the meaning and characteristics]

आर्थिक विकास से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके परिणाम स्वरूप देश के समस्त उत्पादन साधनो का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है जब अर्थव्यवस्था में प्रति व्यक्ति आय GDP में वृद्धि, GNP में वृद्धि, राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ-साथ जनता के जीवन स्तर एवं कल्याण में वृद्धि हो रहा हो तो उसे आर्थिक विकास कहा जाता है अर्थात देश में परिमाणात्मक वृद्धि के साथ साथ गुणात्मक वृद्धि हो रही है तो उसे आर्थिक विकास कहा जाता है, इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वृद्धि हो रही हो।

विशेषता :-

1- आर्थिक विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है
2- आर्थिक विकास में देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही है।
3- आर्थिक विकास एक निरन्तर दीर्घकालीन प्रक्रिया है।
4 देश के संसाधनो का कुशलतम प्रयोग सम्भव होता है।
5- आर्थिक विकास से समाज के सभी वर्गो के जीवनस्तर एवं उनके कल्याण के स्तर में वृद्धि होती है।

* आर्थिक विकास से आर्थिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीति, संस्थागत आदि में समावेशीय परिवर्तन होता है।

② सतत विकास :- धारणीय विकास, संपोषणीय या निर्वहनीय विकास

Sustainable Development

सतत विकास को अंग्रेजी के दो शब्दो Sustain + Development से निकल कर बना हैं Sustain का अर्थ हैं सम्भावना या पोषित करना हैं Development का अर्थ विकास या जीवन की गुणवत्ता में सुधार। सतत विकास की अवधारणा की शुरुआत 1962 में हुई जब वैज्ञानिक रॉकल कारसन ने दो 'साइलेंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक लिखी। सतत विकास का अर्थ आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण को सुरक्षित करना इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधन सुरक्षित रखना हैं। सतत विकास की अवधारणा आर्थिक विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाने पर जोर देती हैं तथा पर्यावरण के विरुद्ध चलने वाली विकास नीतियों में बदलाव लाना हैं।

ब्रेण्टलैण्ड आयोग ने अपनी रिपोर्ट (Our common future) 1987 में दी जिसमें कहा कि "सतत विकास वह विकास हैं जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी वर्तमान आवश्यकता को पूरित करता हो तो उसे सतत विकास कहा जाता हैं।" इस रिपोर्ट में कहा गया कि विकास ऐसा हो हमारी आज की जरूरतों को पूरा करें साथ ही साथ आने वाली पीढ़ियों की जरूरतो को भी अन देखी न करें। सतत विकास प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, ऊर्जा, कचरे का निस्तारण, परिवहन के प्रबन्ध को प्रोत्साहन देता हैं

हैरॉड का समृद्धि माडल ③

(The Harrod Growth Models)

हैरॉड माडल पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए विकास माडल प्रस्तुत करता है इन्होने कीन्स के अल्पकालीन विकास माडल को दीर्घकालीन स्वरूप प्रदान किया ~~यह~~ हैरॉड माडल का विश्लेषण एक उन्नत पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की दीर्घकालीन समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।
हैरॉड-डोमर माडल दोनो ही अर्थशास्त्रीयों का उद्देश्य ऐसी आवश्यक आय वृद्धि दर का निर्धारण करना था जो अर्थव्यवस्था बिना किसी बाधा के कार्यकरण को बनाये रख सके। हैराड ने पूंजी संचय विकास की कुंजी कहा हैं क्योंकि, पूंजी संचय से ही विनियोग होता है इससे आय एवं उत्पादन समता में वृद्धि होती हैं इस प्रकार आयप्रभाव एवं पूर्ति प्रभाव से क्रमशः लोगो की आय में वृद्धि होती हैं जबकि पूर्ति प्रभाव से उत्पादन समता में वृद्धि होती हैं। प्रो० हैराड ने कहा कि बचत का आयसे प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता हैं इसीलिए समाज की बचत आर्थिक विकास के प्रावैगिक पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं हैराड माडल गुणक एवं त्वरक की अन्तक्रिया की सहायता से प्रस्तुत किया अर्थव्यवस्थायें आय की पूर्ण रोजगार संतुलन दशा को बनाये रखने के लिए हैराड ने विकास की आवश्यक दर का निर्धारण तीन प्रकार की वृद्धि दरो की सहायता से प्रस्तुत किया।

1- वास्तविक वृद्धि दर (Actual Growth Rate) GA
2 आवश्यक या अभिष्ट या वांछित वृद्धि दर (Warranted Growth Rate) Gw
3 प्राकृतिक वृद्धि दर (Natural Growth Rate) Gn

हैरॉड माडल में वृद्धि दर की अवधारणा स्पष्ट किजिए –

(4) Explain the concept of the Growth rate in the Harrod model

---

अर्थव्यवस्था में आय की पूर्णरोजगार संतुलन दशा को बनाये रखने के लिए हैरॉड ने विकास की आवश्यक दर का निर्धारण तीन प्रकार की वृद्धि दरो की सहायता से प्रस्तुत किया।

1 - वास्तविक वृद्धि दर (Actual Growth rate GA)

वास्तविक वृद्धि दर वह दर हैं जिस पर देश विकास कर रहा होता हैं यह वह दर हैं जो निवेश किये जाने के बाद अर्थव्यवस्था में वास्तविक रूप से पायी जाती हैं विकास की वास्तविक दर को पूंजी उत्पाद अनुपात (COR) निर्धारित करता हैं यह अल्पकालीन चक्रीय परिवर्तनो को प्रकट करती हैं

$GC = S = G = \frac{S}{C}$ ~ $\frac{\text{बचत अनुपात}}{\text{पूंजी उत्पाद अनुपात}}$

$GC = S$

G = आय में होनें वाली वृद्धि अर्थात $\frac{\Delta Y}{Y}$

C = पूंजी में किया गया शुद्ध योग अर्थात पूंजी उत्पाद अनुपात अर्थात $\frac{I}{\Delta Y}$

S = बचत प्रवृत्ति $\frac{S}{Y}$

$GC = S$

$\frac{\Delta Y}{Y} \cdot \frac{I}{\Delta Y} = \frac{S}{Y}$

$\frac{I}{Y} = \frac{S}{Y}$ ~ $S = I$

यहां वास्तविक बचत एवं वास्तविक निवेश आपस में बराबर हैं।

परिणाम ... समूच्चय ... यदि किसी ... अथवा ...

अभीष्ट या आवश्यक वृद्धि दर Gw (5)

(Warranted Growth rate Gw)

आवश्यक वृद्धि दर विकास की वह वृद्धि दर है जिसे यदि प्राप्त कर लिया जाय तो उद्यमी ऐसी मानसिक स्थिति में होते हैं कि वे इसी प्रकार से विकास करने के लिए प्रेरित होते हैं। यह दर किसी अर्थव्यवस्था की आय की पूर्ण क्षमता वृद्धि दर होती है दूसरे शब्दों में यदि आय में वृद्धि विकास की आवश्यक दर के अनुसार होती है तो अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टाक का पूर्ण शोषण किया जायेगा और अर्थव्यवस्था सतत प्रगति के मार्ग पर होगी इस आवश्यक वृद्धि दर पर उद्यमी पूर्ण संतुष्ट रहते हैं क्योंकि इस दर पर मांग इतनी ऊंची होती है कि व्यापारी अपना समस्त उत्पादन बेचने में सफल हो जाते हैं।

$$G_w C_r = S$$

$$G_w = \frac{S}{C_r} = \frac{\text{सीमान्त बचत प्रवृत्ति}}{\text{पूंजी उत्पाद अनुपात}}$$

$G_w \rightarrow$ आवश्यक वृद्धि दर जिस पर निवेश की मात्रा उद्यमियों को बनाये रखने के लिए आवश्यक है $G_w = \frac{\Delta Y}{Y}$

C_r = पूंजी उत्पाद अनुपात जो आवश्यक दर को बनाये रखने के लिए आवश्यक है।

S = सीमान्त बचत प्रवृत्ति

अभीष्ट या आवश्यक वृद्धि दर Gw (5)
(warranted Growth rate Gw)

आवश्यक वृद्धि दर विकास की वह वृद्धि दर हैं जिसे यदि प्राप्त कर लिया जाय तो उद्यमी ऐसी मानसिक स्थिति में होते है कि वे इसी प्रकार से विकास करने के लिए प्रेरित होते हैं।
यह दर किसी अर्थव्यवस्था की आय की पूर्ण क्षमता वृद्धि दर होती हैं दूसरे शब्दो में यदि आय में वृद्धि विकास की आवश्यक दर के अनुसार होती हैं तो अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टाक का पूर्ण शोषण किया जायेगा और अर्थव्यवस्था सतत प्रगति के मार्ग पर होगी इस आवश्यक वृद्धि दर पर उद्यमी पूर्ण संतुष्ट रहते हैं क्योंकि इस दर पर मांग इतनी ऊंची होती हैं कि व्यापारी अपना समस्त उत्पादन बेचने में सफल हो जाते हैं।

$$Gw\,Cr = S$$

$$Gw = \frac{S}{Cr} = \frac{\text{सीमान्त बचत प्रवृत्ति}}{\text{पूंजी उत्पाद अनुपात}}$$

Gw → आवश्यक वृद्धि दर जिस पर निवेश की मात्रा उद्यमियों को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं $Gw = \frac{\Delta Y}{Y}$

Cr = पूंजी उत्पाद अनुपात जो आवश्यक दर को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं।

S = सीमान्त बचत प्रवृत्ति

प्राकृतिक वृद्धि दर (Natural Growth Rate) Gn

प्राकृतिक वृद्धि दर वह दर हैं जिस पर पूर्ण रोजगार बना रहता हैं यह दर देश के समष्टि चरो जैसे प्राकृतिक संसाधन, जनसंख्या, तकनीकी स्तर, पूंजी उपकरण, आदि पर निर्भर करती हैं ये सभी समष्टि चर परिवर्तनशील हैं।

$Gn\, Cr = s$

Gn = प्राकृतिक वृद्धि दर

Cr = पूंजी उत्पाद अनुपात

s = सीमांत बचत प्रवृत्ति

Gn विकास की प्रकृति दर हैं इसके द्वारा विकास की उच्चसीमा निर्धारित होती हैं अर्थव्यवस्था Gn की सीमा से ऊपर नहीं जा सकती हैं क्योंकि उसके बाद प्राकृतिक संसाधन और श्रम पूर्ति की सीमाएं लागू होने लगती हैं।

सतत विकास की दशा में $G_A = Gw$ होना चाहिए पूर्ण रोजगार संतुलन के लिए

$$G_A = Gw = Gn$$

प्रो० हैरार्ड का कथन हैं कि $G_A = Gw = Gn$ छुरी धार संतुलन (Knife Edge Balance) की स्थिति हैं जिसे प्राप्त करना कठिन होता हैं।

(7) हैरॉड माडल समृद्धि दर में छुरी-धार ~~संतुलन~~ समस्या
(The Knife-Edge problem in the Harrod Model)

हैराड के समृद्धि माडल में यदि $G_A = G_w$ हो तो दीर्घकालीन संस्थिति की दशा होगी यदि इनमें विचलन या असंस्थिति पायी जाती हैं पर ~~दोनो बराबर~~ यदि दोनो परस्पर बराबर नहीं तो दो स्थितियाँ हो सकती हैं

1- $G_A > G_w$ तो जिसमें वास्तविक वृद्धि दर वांछित वृद्धि दर से अधिक हो तो उत्पादक यह सोचेगा ~~कि~~ तथा विश्वास करेगा कि अर्थव्यवस्था में समृद्धि की सम्भावना अधिक हैं और इससे अर्थव्यवस्था के विकसित होने की क्षमता का कम अनुमान लगाया हैं ऐसी स्थिति में अगले अवधि में अर्थव्यवस्था में G_w का ऊँचा अनुमान लगायेगा और G_w के साथ अधिक विनियोग करेगा विनियोग की ~~का~~ यह वृद्धि गुणक प्रभाव के कारण आय में और अधिक वृद्धि लायेगी और पुनः G_w, G_A से कम हो जायेगी यह अगली अवधि में यही क्रम बना रहता हैं इस प्रकार यदि एक बार $G_A > G_w$ तो यह संचयी रूप से इससे दूर ही हटती/ होती जायेगी इस दशा में मांग की तुलना में वस्तु की पूर्ति कम होगी जो मुद्रा स्फीति की दशा जनित होगी।

2- $G < G_w$ वास्तविक वृद्धि दर, वांछित वृद्धि दर से कम हो तो उत्पादक यह विश्वास करेगा इसका G_w के सम्बन्ध में प्रारम्भिक अनुमान ऊँचा था या उसने अर्थव्यवस्था की समृद्धि क्षमता के सम्बन्ध में आशावादी अनुमान लगाया फलस्वरूप आने वाले अवधि में वे अपने विनियोग में कमी लायेगा

(7) हैरॉड माडल समृद्धि दर में छुरी-धार संतुलन समस्या

(The Knife-Edge Problem in the Harrod Model)

हैराड के समृद्धि माडल में यदि $G_A = G_W$ हो तो दीर्घकालीन संस्थिति की दशा होगी यदि इनमें विचलन या असंस्थिति पायी जाती है पर ~~दोनो बराबर~~ यदि दोनो परस्पर बराबर नहीं तो दो स्थितियाँ हो सकती हैं

1- $G_A > G_W$ तो जिसमें वास्तविक वृद्धि दर वांछित वृद्धि दर से अधिक हो तो उत्पादक यह सोचेगा ~~कि~~ तथा विश्वास करेगा कि अर्थव्यवस्था में समृद्धि की सम्भावना अधिक हैं और इससे अर्थव्यवस्था के विकसित होने की क्षमता का कम अनुमान लगाया हैं ऐसी स्थिति में अगले अवधि में अर्थव्यवस्था में G_W का ऊँचा अनुमान लगायेगा और G_W के साथ अधिक विनियोग करेगा विनियोग की ~~क~~ यह वृद्धि गुणक प्रभाव के कारण आय में और अधिक वृद्धि लायेगी और पुनः G_W, G_A से कम हो जायगी यह अगली अवधि में यही क्रम बना रहता हैं इस प्रकार यदि एक बार $G_A > G_W$ तो यह संचयी रूप से इससे दूर ही हटती / होती जायेगी इस दशा में मांग की तुलना में वस्तु की पूर्ति कम होगी जो मुद्रा स्फीति की दशा जनित होगी।

2- $G < G_W$ वास्तविक वृद्धि दर, वांछित वृद्धि दर से कम हो तो उत्पादक यह विश्वास करेगा इसका G_W के सम्बन्ध में प्रारम्भिक अनुमान ऊँचा था या उसने अर्थव्यवस्था की समृद्धि क्षमता के सम्बन्ध में आशावादी अनुमान लगाया फलस्वरूप आने वाले अवधि में वे अपने विनियोग में कमी लायेगा

गुणक के विपरित दिशा में क्रियाशीलन के कारण आय में और कमी आयेगी और वास्तविक वृद्धि दर फिर कम होती जायेगी आगामी अवधि निराशावादी के कारण उत्पादक विनियोग में और कमी और आय में और कमी होगी। इससे G तथा Gw के बीच अन्तराल बढ़ता जायेगा ऐसी दशा में उत्पादक क्षमता का आधिक्य या निष्क्रिय उत्पादन क्षमता की स्थित होगी हैराड के अनुसार इस स्थिति में सामान्य आधि उत्पादन की स्थिति होगी जो संचयी रूप से और खराब होती जायेगी।

स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था यदि एक बार संास्थिति जहाँ GA = Gw से विचलित हुई तो पुनः सांस्थिति पर नहीं आ पायेगी बल्कि संचयी रूप से इससे दूर ही होती जायेगी इसे हैरॉड माडल की चाकू धार समस्या कहा जाता है जिसका अर्थ है कि हैरॉड माडल वृद्धि दर माडल में सांस्थिति की स्थिति चाकू की धार पर ही होगी थोड़ा सा विचलन इसे सांस्थिति की स्थिति से हटा देगी और पुनः सांस्थिति नहीं प्राप्त हो सकती है। जो प्रदर्शित चित्र में दर्शाया गया है।

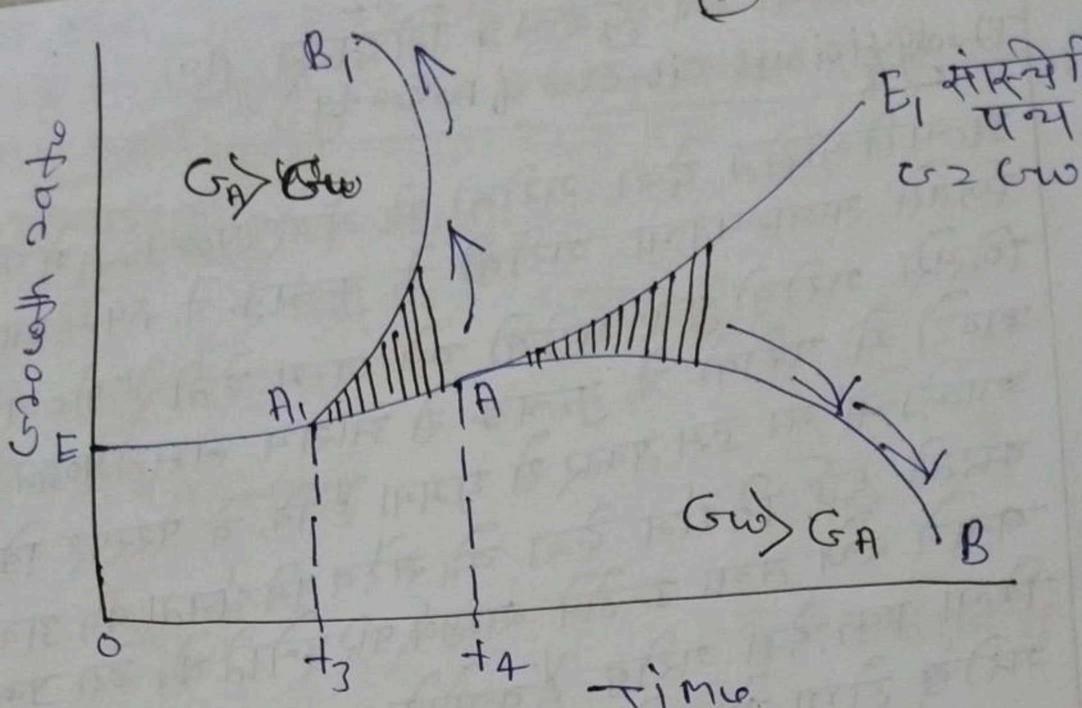

प्रदर्शित चित्र में चाकू धार समस्या को समझाया गया हैं। बिन्दु EE_1 संस्थिति पथ प्रदर्शित करता हैं जहां $G = G_w$ हैं जब $G_A = G_w$ तब तक तो अर्थव्यवस्था EE_1 से विकसित होती जायेगी पर EE_1 पर चाकू धार की तरह ही संतुलन होगा यदि किसी समय $G_w > G_A$ हो जाय तो जैसे t_4 अवधि के बाद इसमें दर्शाया गया हैं जो t_4 तक अर्थव्यवस्था संस्थिति पथ पर चलेगी पर इसके बाद संस्थिति पथ से दूर हटती जायेगी जैसा चित्र में AB वक्र से प्रदर्शित है इसी प्रकार यदि t_3 समय के बाद $G_A > G_w$ तो अर्थव्यवस्था संस्थिति पथ से दूर ही हटती जायेगी जैसे A_1B_1 वक्र से दर्शाया गया हैं।

गरीबी का दुश्चक्र सिद्धान्त (10)
(The vicious circle of poverty)

अल्पविकासित देश गरीबी की भँवर (poverty) में फंसे हुए हैं, जिससे सामान्यतया गरीबी के कुचक्र के रूप में जाना जाता है। जिससे गरीबी पुनः गरीबी को जन्म देती हैं प्रो० नर्क्स के शब्दो में गरीबी के कुचक्र से आशय नक्षत्रमंडल के समान शक्तियों का इस प्रकार से घुमना हैं कि वे परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया करती हुई निर्धन देश को सदैव निर्धनता की अवस्था में बनाये रखे तथा उन्होने सम्पूर्ण परिस्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया एक देश गरीब हैं क्योंकि वह गरीब हैं। यदि कोई देश गरीब होगा तो उसके पास आय कम होगी, लोगो का उपभोग स्तर नीचा होगा, कार्य करने वाली जनसंख्या को न तो ठीक से खाना मिलेगा न ही उचित शिक्षा का प्रबन्ध होगा जिससे श्रमिक कम कार्यकुशल तथा खराब स्वास्थ्य होगा। उनकी उत्पादकता कम होगी पुनः आय व उत्पादकता कम होगी और आय की कमी जो गरीबी के रूप में परिलक्षित होगी जो लगातार आय में कमी लायेगी जिससे बचत कम या शून्य होगी इस दशा में पूंजी निर्माण की दर में कमी के कारण विनियोग में कमी उत्पादन में कमी आदि देखने को मिलेगा। प्रो० नर्क्स ने गरीबी के दुश्चक्र की व्याख्या मांग एवं पूर्ति दोनो पक्षो पर की हैं।

गरीबी के कुचक्र। दुश्चक्र का पूर्ति पक्ष :-

प्रो० नर्क्स ने बताया अल्पविकसित देश में वास्तविक आय की मात्रा अत्यन्त कम हैं जिसके ~~फलस्~~ परिणाम स्वरूप बचत की क्षमता अत्यन्त ही कम हैं पर आय की कमी अर्थव्यवस्था में अल्प उत्पादन का परिणाम हैं और अल्प उत्पादकता अधिकतर पूंजी की कमी के कारण जो बचत की क्षमता में कमी के कारण हैं।

इस प्रकार अल्प आय के कारण बचत की क्षमता में कमी से जो चक्र प्रारम्भ हुआ था वह वहां पर आकर पूरा हो जाता है यही क्रम निरन्तर चलता रहता है।

पूर्ति पक्ष (Supply Side)

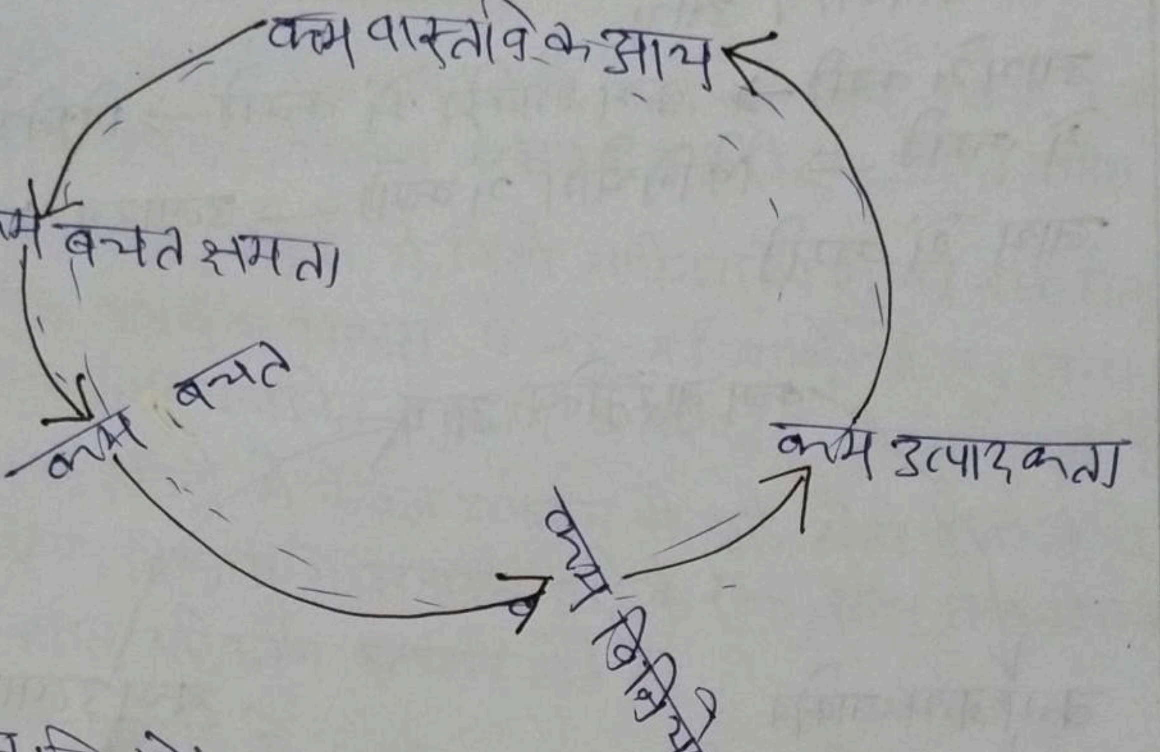

प्रदर्शित चित्र में कम वास्तविक आय के कारण बचत करने की क्षमता कम होगी जिससे बचत की मात्रा में कमी आयेगी इससे पूंजी निर्माण तथा विनियोग की मात्रा में कमी आयेगी जिससे उत्पादकता की कमी होगी तथा वास्तविक आय में कमी होगी बायी ओर से चलकर यह चक्र जहां से प्रारम्भ हुआ था वहीं पूर्ण हो जाता है।

मांग पक्ष (Demand Side) —

किसी भी अर्थव्यवस्था का आर्थिक विकास केवल बचत तथा पूंजी निर्माण की दर पर ही निर्भर नहीं करता है उत्पादित वस्तु की मांग या विनियोग के लिए प्रेरणा का होना अत्यन्त आवश्यक है यदि बाजार का अभाव हो तो पूंजी की प्रचुर मात्रा के बावजूद भी आर्थिक विकास नहीं हो सकेगा। प्रो० नर्क्स ने बताया कि अल्पविकसित देशों में मांग पक्ष भी कुचक्र से प्रभावित है।

अल्पविकसित देश में वास्तविक आय की कमी हैं जिसके कारण उसकी क्रय शक्ति कम है। इससे साहसी को मांग की कमी के कारण विनियोग की प्रेरणा कम मिलती हैं पर्याप्त मांग के अभाव में कोई भी साहसी पूंजी विनियोग नहीं करेगा। आय

आय में कमी → क्रय शक्ति में कमी → विनियोग की प्रेरणा में कमी → विनियोग में कमी → उत्पादन ह्रास → वास्तविक आय में कमी

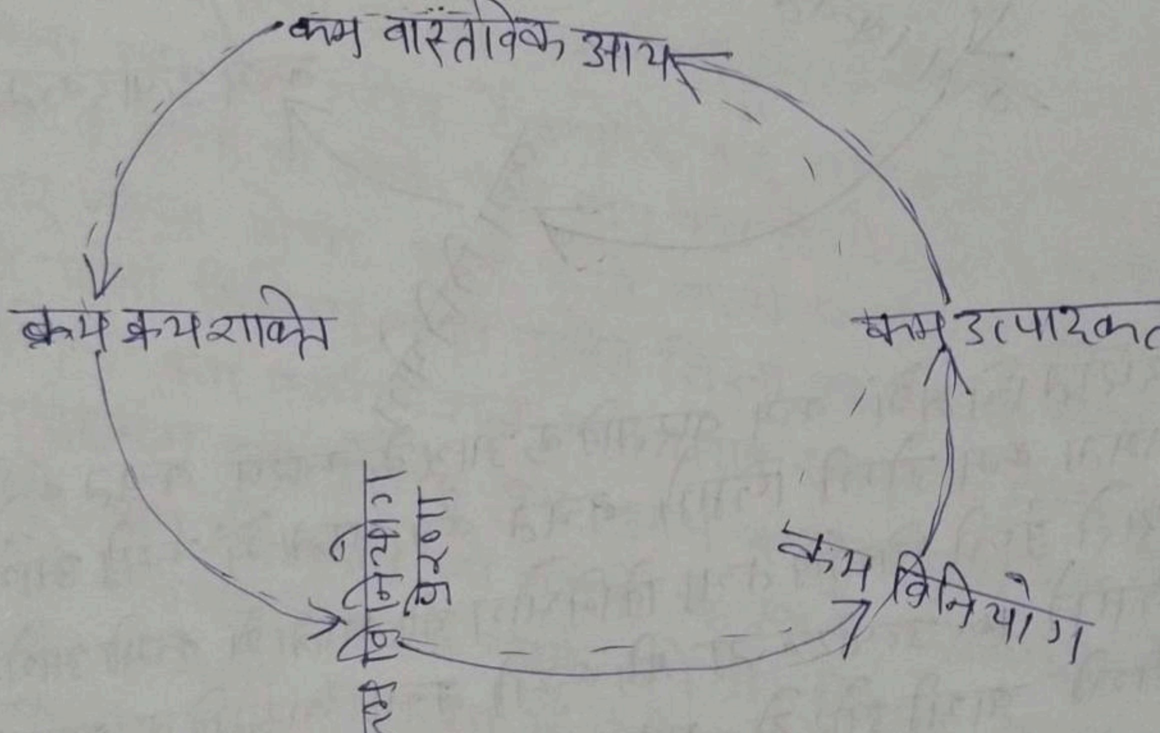

गरीबी के कुचक्र के दोनो ही पक्षों पर विचार करने से हम पाते है कि वास्तविक आय में कमी जो उत्पादकता की कमी के रूप में प्रदर्शित हैं दोनो एक कामन है वह है विनियोग की न्यूनता का परिणाम हैं। प्रो० नर्कसे ने कहा हैं कि गरीबी का कुचक्र बढ़ने की प्रवृत्ति जरूर होती हैं लेकिन यह अभेद्य नहीं हैं और यदि इसे एक बार किसी बिन्दु पर तोड़ दिया जाय तो इसके विभिन्न तत्वों में चक्रात्मक सम्बन्ध होने के कारण आर्थिक विकास की क्रिया संचयी होगी इसे संतुलित विकास प्रत्यागम से तोड़ा जा सकता हैं।

आर्थिक समृद्धि एवं आर्थिक विकास में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
[Explain the difference between Economic Growth and Economic Development]

* आर्थिक समृद्धि एक स्थिर गति वाली स्वभाविक प्रक्रिया है आ। जबकि आर्थिक विकास असतत प्रकृति का प्रेरित प्रयास है।
* आर्थिक समृद्धि प्रक्रिया में किसी नवीनता का सृजन नहीं होता है। जबकि आर्थिक विकास में नई-नई शक्तियों का जन्म होता है जिसके द्वारा प्रचलित संतुलन में परिवर्तन किया जाता है।
* आर्थिक समृद्धि में केवल उत्पादन की वृद्धि होती है जबकि आर्थिक विकास में उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ तकनीकी एवं संस्थागत परिवर्तन उत्पन्न होते हैं।
* आर्थिक समृद्धि में GDP, GNP, एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि परिमाणात्मक परिवर्तन होता है जबकि आर्थिक विकास में सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक गुणात्मक परिवर्तन होता है अर्थात आर्थिक विकास में परिमाणात्मक परिवर्तन के साथ गुणात्मक परिवर्तन भी होता है।
* आर्थिक समृद्धि का सम्बन्ध विकसित देशों से है जबकि आर्थिक विकास का सम्बन्ध विकासशील एवं अल्पविकसित देशों से है
* आर्थिक समृद्धि स्थैतिक साम्य है जबकि आर्थिक विकास का सम्बन्ध गत्यात्मक साम्य से है।

निर्धनता का अर्थ एवं निवारण के उपाय →

अपने दैनिक जीवन में हम ऐसे अनेक लोगो को देखते हैं जिनके बारे में सोचते हैं कि वे निर्धन हैं। जैसे भूमिहीन श्रमिक, शहरो की भीड़ भरी झुग्गियो में रहने वाले लोग, निर्माण स्थल के दैनिक वेतन भोगी श्रमिक, ढाबे में काम करने वाला बालश्रमिक एवं चिथड़ो में बच्चो को हाथ में लिए भिखारी सिग्नलो पर भीख मांगते हुए यह सभी किसी न किसी अभाव से ग्रसीत या वंचित रहते हैं जो रोटी, कपड़ा एवं मकान जीवन की मूलभूत आवश्यकताऐं वंचित रहते हैं। निर्धनता का अर्थ भुखमरी और आश्रय का न होना है यह एक ऐसी स्थिति भी है जब माता-पिता अपने बच्चो को विद्यालय नहीं भेज पाते या किसी बीमार आदमी का इलाज नहीं करवा पाते हैं, स्वच्छ जल पीने से वंचित, सफाई सुविधाओं का अभाव भी है, नियमित रोजगार की कमी असहाय की भावना से जीना आदि को निर्धनता से ग्रसित समूहो को हम निर्धन कह सकते हैं।

निर्धनता रेखा :-

निर्धनता के आकलन की एक सर्वमान्य विधि आय अथवा उपभोग स्तरो पर आधारित हैं। किसी व्यक्ति को निर्धन माना जाता हैं, यदि उसकी आय या उपभोग स्तर किसी ऐसे न्यूनतम स्तर से नीचे गिर जाय जो मूलभूत आवश्यकताओं के एक दिये हुए समूह को पूर्ण करने के लिए आवश्यक है। भारत में खाद्य आवश्यकताओं के लिए कैलोरी आवश्यकताओ पर आधारित हैं। ग्रामीण क्षेत्र के लिए 2400 कैलोरी प्रति व्यक्ति व्यक्ति प्रतिदिन एवं नगरीय क्षेत्रो के लिए 2100 कैलोरी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन

निर्धारित की गयी हैं, जबकि आय स्तर पर वर्ष 2011-12 में सुरेश तेन्दुलकर कमेटी ने सुझाव दिया था कि ग्रामीण क्षेत्र के लिए 816 रु० प्रति व्यक्ति प्रतिमाह / प्रति परिवार 4080 रु० प्रतिमाह से कम तथा शहरी क्षेत्रों में 1000 रु० प्रति व्यक्ति प्रतिमाह / प्रति परिवार (5 लोग) 5000 रु० से कम हो तो उसे गरीब माना जायेगा। गरीबी के मुख्यत: दो रू० होते हैं:

सापेक्ष गरीबी :- सापेक्ष गरीबी यह व्यक्त करता हैं कि समाज का एक वर्ग आय या उपभोग के स्तर की दृष्टि से सम्पूर्ण समाज या अर्थव्यवस्था के औसत आय या उपभोग से निचे हैं। सापेक्ष गरीबी यह स्पष्ट करती हैं कि विभिन्न आय वर्गो के बीच कितनी विषमता हैं। अर्थात समाज के अन्य लोगो की तुलना में कम आय या संसाधन होना।

निरपेक्ष गरीबी - निरपेक्ष निर्धनता से आशय ऐसे लोगो से लगाया जाता हैं जो निर्वाह स्तर में इतने निम्न हैं कि न्यूनतम आवश्यकता को भी पूरी नहीं कर पाता हैं अर्थात रोटी, कपड़ा, मकान जो जीवन की मूल भूत आवश्यकता को पूरा करने में असमर्थ है।

गरीबी निवारण के उपाय :-

* बचत प्रोत्साहित किया जाय तथा बचतो को उत्पादक कार्यो में निवेश किया जाय।
* रोजगार के अवसरो का सृजन किया जाय
* भू-सुधार एवं भूमि वितरण पैमाने में बदलाव पर बल।
* लघु एवं कुटीर उद्योगो को प्रोत्साहित (MSME)
* सामाजिक न्याय पर बल।
* ग्रामीण क्षेत्रो में सामाजिक सुरक्षा पर विशेष बल
* विनिर्माण हब को बढ़ावा देना
* कौशल युक्त रोजगार एवं शिक्षा पर बल
* राजनैतिक इच्छा शक्ति प्रबल होना।

(16) प्रो० हर्शमैन्

असंतुलित विकास सिद्धान्त क्या है।

what is Unbalanced Growth theory

असंतुलित विकास सिद्धान्त देने वाले प्रमुख अर्थशास्त्री A. O. हर्षमैन हैं, इनके समर्थक रोस्टोव सिंगर, स्ट्रीटेन, फ्लेमिंग आदि प्रमुख अर्थशास्त्री हैं, इन्होंने संतुलित विकास सिद्धान्त की आलोचना किया और बताया कि इस रास्ते से आर्थिक विकास के लिए अल्पविकसित देशों में अनेक अवरोध पाये जाते हैं इनमें संसाधन का अभाव, गतिशीलता एवं विनियोग प्रेरणा का अभाव पाया जाता है। इसीलिए यह आर्थिक विकास का रास्ता नहीं बन सकता है इसके लिए असंतुलित विकास का सुझाव दिया। प्रो० हर्षमैन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Strategy of Economic Development में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और विचार किया कि यदि किसी अर्थव्यवस्था में संसाधन कम या सीमित हो तो हम विभिन्न विनियोग या प्रोजेक्ट के बीच किस प्रकार चुनाव करें कि इनका अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान उनकी लागत की तुलना में अधिक हो तथा उनके आर्थिक विकास में योगदान कैसे मापा जाय।

हर्षमैन के अनुसार "सामान्य रूप से विकास नीति को असंतुलन की क्रिया रखना चाहिए। समाप्त नहीं करना चाहिए किसी प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में लाभ-तथा हानियां जिसके लक्षण हैं यदि अर्थव्यवस्था को निरन्तर आगे बढ़ता हुआ बनाये रखना हो तो विकास नीति का यह काम होगा कि वह तनाव (Tension), असंगति (dis PROPORTION) तथा असंतुलन बनाये रखे। किन विनियोग को चुना इसके सम्बन्ध में दो प्रकार के विनियोग हैं। (i) प्रतिस्थापन चुनाव (ii) स्थगन चुनाव

(i) [illegible] (17)

(ii) [illegible]

हर्शमैन ने असंतुलन पैदा करने के लिए दो रास्ते की बात करते है —

1– सामाजिक उपरिव्यय पूंजी (Social over head capital) (SOC)

अधोसंरचना के विकास के द्वारा असंतुलन –

अधोसंरचना (infrastructure) के विनियोग के अन्तर्गत वे क्रियाये सम्मिलित की जाती हैं जिन पर अन्य औद्योगिक क्रियाएं निर्भर रहती हैं जैसे– सड़क, सिचाई, जल, विद्युत, परिवहन, प्रशासन, टेलीफोन कनेक्टीविटी, पोस्टल सेवा, बैंक, ऊर्जा आदि को रखते हैं ये सेवाए अपनी कुछ विशेषता के कारण अन्य विनियोग से भिन्न हैं ये सेवाएं सामान्यतः वही उत्पादित या सृजित होगे जहां प्रयोग में लायी जानी हैं इसीलिए सामान्यतः इसका आयात नहीं किया जा सकता हैं ये सेवाएं सरकार द्वारा निःशुल्क या नियन्त्रित सस्ते मूल्य पर दी जाती हैं, इन विनियोगो में शुरू में बहुत अधिक पूंजी विनियोग की आवश्यकता पड़ती हैं क्योंकि ये अविभाज्य होती हैं SOC में वर्तमान समय में किया गया विनियोग बाद में निजी क्षेत्रो को प्रोत्साहित करती हैं।

प्रो० हर्शमैन ने कहा हैं कि " सामाजिक उपरिव्यय पूंजी में विनियोग का समर्थन इसलिए किया जाता हैं, क्योंकि यह प्रत्यक्ष उत्पादन क्रियाओं को आने का आमंत्रण देती हैं।"

(18)

2 प्रत्यक्ष उत्पाद क्रियाएं [Directly Productive Activities] DPA

दूसरा रास्ता DPA का हो सकता हैं जिनसे प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन या उपभोग वस्तुएं प्राप्त हो जाय, में विनियोग किया जाय तथा SOC को पीछे रहने दे इस प्रकार अर्थव्यवस्था में SOC की कमी हो और असंतुलन पैदा हो SOC की कमी राजनैतिक दबाव पैदा कर सकती हैं और कालान्तर में आवश्यक रूप से विनियोग हो जायेगा। इस प्रकार असंतुलन पैदा करने या पिछड़ी अर्थव्यवस्था को विकसित करने के दो रास्ते हुए एक रास्ता वह हैं जिसे हर्षमैन ने क्षमता आधिक्य के द्वारा विकास कहा दूसरा रास्ता जिसमें DPA विनियोग SOC विनियोजन से पहले हो जिनको हर्षमैन ने अल्पता के द्वारा विकास कहा।

कुछ विनियोग श्रेणी लाभ प्रत्याशा से प्रेरित होते हैं जब लाभ की प्रत्याशा बढ़ जाती हैं तो साहसी विनियोग करने के लिए प्रेरित होता है जबकि कुछ विनियोग श्रेणी राजनैतिक दबाव के कारण होता हैं लाभ प्रत्याशा वाला रास्ता SOC से DPA वाला होगा जिसमे SOC में विनियोग पहले होगा सस्तीदर पर आगत की उपलब्धता लाभ में वृद्धि लायेगी DPA विनियोग के लिए प्रेरित करेगी जबकि राजनैतिक दबाव वाला रास्ता DPA से SOC वाला होगा जिसमें SOC की कमी राजनैतिक दबाव को जन्म देगी और SOC में विनियोग होगा एक में SOC की अधिकता के कारण तो दूसरे में SOC की कमी के कारण एक रास्ता प्रेरणा का होगा। जबकि दूसरा रास्ता दबाव का होगा।

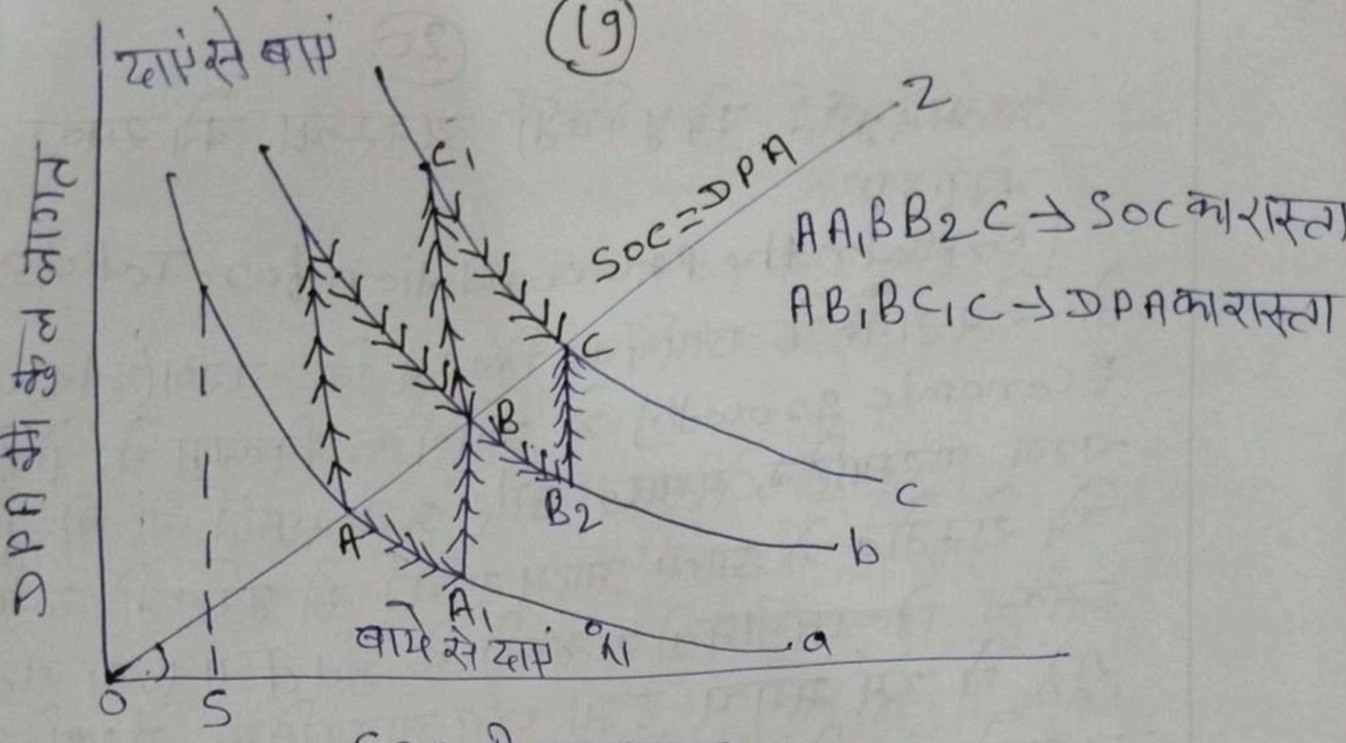

SOC की उपलब्धता तथा लागत

प्रदर्शित चित्र में Y अक्ष पर DPA तथा X अक्ष पर SOC को प्रदर्शित किया गया हैं a, b, c वक्र DPA विनियोग से DPA उत्पादन को उत्पादित करने की कुल लागत प्रदर्शित करती हैं। चित्र में abc वक्र ऋणात्मक ढाल की हैं जो यह प्रदर्शित करती हैं कि जैसे-जैसे SOC की उपलब्धता बढ़ती जायेगी DPA की लागत कम होती जायेगी। दायी ओर बिन्दु N हैं जो माना यहां पर SOC की उपलब्धता अधिक हैं तब DPA की लागत अत्यन्त ही कम हैं और SOC में अतिरिक्त वृद्धि DPA लागत में नगण्य कमी लाती हैं। यदि वक्र दायी से बायी ओर बढ़े तो DPA उत्पादन की लागत शुरू में धीरे-धीरे बढ़ती हैं तब तेजी से बढ़ती हैं और अंत में लम्बीय रूप हो जाती हैं। क्योंकि SOC की एक न्यूनतम मात्रा हैं जो DPA की किसी मात्रा को उत्पादित करने के लिए आवश्यक हैं जैसे वक्र a से सम्बंधित न्यूनतम SOC की मात्रा OS हैं। OZ रेखा अनुकूलतम बिन्दु है। SOC तथा DPA दोनो को एक साथ विकसित नहीं किया जा सकता हैं यदि SOC का रास्ता का चयन करते हैं तो चित्र में विकास पथ AA1BB2C का होगा। दूसरी सम्भावना AB1BC1C विकास पथ की हैं

आत्मस्फूर्ति की पूर्ववर्ती अवस्था को स्पष्ट कीजिए

[Explain the pre condition for Take off]

प्रो० रोस्टोव के आर्थिक विकास के चरण (Stage of Economic growth) में आर्थिक विकास के ऐतिहासिक चरण पारम्परिक समाज और आत्म स्फूर्ति के बीच के चरण को रोस्टोव ने आत्म आत्म स्फूर्ति की पूर्ववर्ती दशाये कहा। इसका विकास 17वीं शताब्दी के अंत तथा 18वीं शताब्दी के शुरू में उस समय हुआ जब आधुनिक वैज्ञानिक खोजो का प्रयोग कृषि तथा उद्योग में किया जाने लगा। इसके लिए निम्न दशाएं होनी चाहिए।

* विनियोग की दर राष्ट्रीय आय के 10% तक बढ़ा दी जाय। विनियोजन मुख्य रूप से यातायात तथा सामाजिक उपपरिव्यय पूंजी में किया जाना चाहिए। जिससे अर्थव्यवस्था में अधोसंरचना का निर्माण हो सके।
* परम्परागत अर्थव्यवस्था जो प्रमुख रूप से एक कृषि प्रधान समाज हैं अपने को एक ऐसे समाज में बदलने का प्रयास करे जो मुख्य रूप से एक औद्योगिक समाज हो।
* आत्मस्फूर्ति की अवस्था की प्राप्ति के लिए रोस्टोव ने साहसी की भूमिका पर बल दिया जो ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो आधुनिक वैज्ञानिक खोजो तथा कम लागत वाली तकनीकी को लागू कर सके।
* रोस्टोव ने प्रमुख क्षेत्र या अग्रगामी क्षेत्र (Leading Sector) की भूमिका पर बल देते हैं।

प्रो० रोस्टोव के आर्थिक विकास के ऐतिहास-चरण में आत्म स्फूर्ति की अवस्था - से आप क्या समझते हैं।

[What do you understand by the stage of ~~Economic growth~~ Take off in Pro Rostows in historical stage of Economic growth]

रोस्टोव के अनुसार आत्म स्फूर्ति की अवस्था मध्यान्तर है जबकि स्थिर समृद्धि की विरोधी प्राचीन शक्तियां पूर्णतया समाप्त हो जाती हैं आर्थिक प्रगति लाने वाली शक्तियां जो आधुनिक क्रियाओं को बहुत सीमित उछाल दे पाती हैं भी विकसित होती हैं तथा समाज में प्रभुत्वकारी हो जाती हैं। समृद्धि सामान्य दशा बन जाती है चूंकि आत्म स्फूर्ति की आवश्यक दशाओं की पूर्ति pre take off में ही हो जाती हैं, इसको प्राप्त करने के लिए न्यूनतम तीन दशाओं को प्राप्त करना आवश्यक है -

* राष्ट्रीय आय का 10% से अधिक विनियोजन हो यदि किसी देश की जनसंख्या बढ़ रही हैं तो आर्थिक प्रगति के लिए आवश्यक हैं कि वार्षिक शुद्ध उत्पाद में इतनी पर्याप्त वृद्धि हो कि जिससे प्रति व्यक्ति आय कायम रह सके।
* अग्रगामी सेतो की तेजी से वृद्धि, किसी भी अर्थव्यवस्था में जो आत्म स्फूर्ति की स्थिति प्राप्त कर रही हो, किसी एक या एक से अधिक अग्रगामी सेतो की तेजी से वृद्धि आवश्यक हैं। निर्यात उद्योगो जिसमें बहुत अधिक मात्रा में पूंजी का आयात बढ़ता हैं आत्म स्फूर्ति अवस्था को लाने में सहायक माना गया हैं।
* प्रो॰ रोस्टोव ने बताया कि कोई भी अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थव्यवस्था में बदल पायेगी कि नहीं तथा उसके बदले में कितना समय लगेगा यह अर्थव्यवस्था के राजनैतिक, सामाजिक तथा संस्थागत ढांचे या रूप रेखा पर निर्भर करेगा इस दिशा में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं

लारेंज वक्र आय की असमानता एवं गरीबी मापक स्पष्ट किजिए -

लारेंज वक्र को 1905 मैक्स ओ लारेंज ने विकासित किया जबकि गिनी गुणांक को 1912 में इटैलियन सांख्येक कोरेडो गिनी ने विकासित किया यह आय असमानता मापने की दो विधियां हैं। लारेंज वक्र के प्रत्येक बिन्दु उन परिस्थितियों या व्यक्तियों को प्रदर्शित करते हैं जो एक निश्चित आय के प्रतिशत के निचे हैं जैसे यदि यदि यह प्रदर्शित किया जाय कि कुल आय का 10% कितने परिवारों के पास हैं यदि 20%, 30% आय को धारित करने वाले परिवारो को ज्ञात कर सकते हैं इन बिन्दुओं से जाने वाली रेखा को लारेंज वक्र कहते हैं।

इसके प्रत्येक बिन्दु को हम इस प्रकार पढ़ते हैं सभी परिवारो के निचले 20% के पास कुल आय का 10% है। लारेंज वक्र x अक्ष पर आय का संचयी प्रतिशत y अक्ष पर कुल आय का संचयी प्रतिशत यह शुन्य से शुरु होकर 100 तक समाप्त होगा OD रेखा आय समता रेखा है।

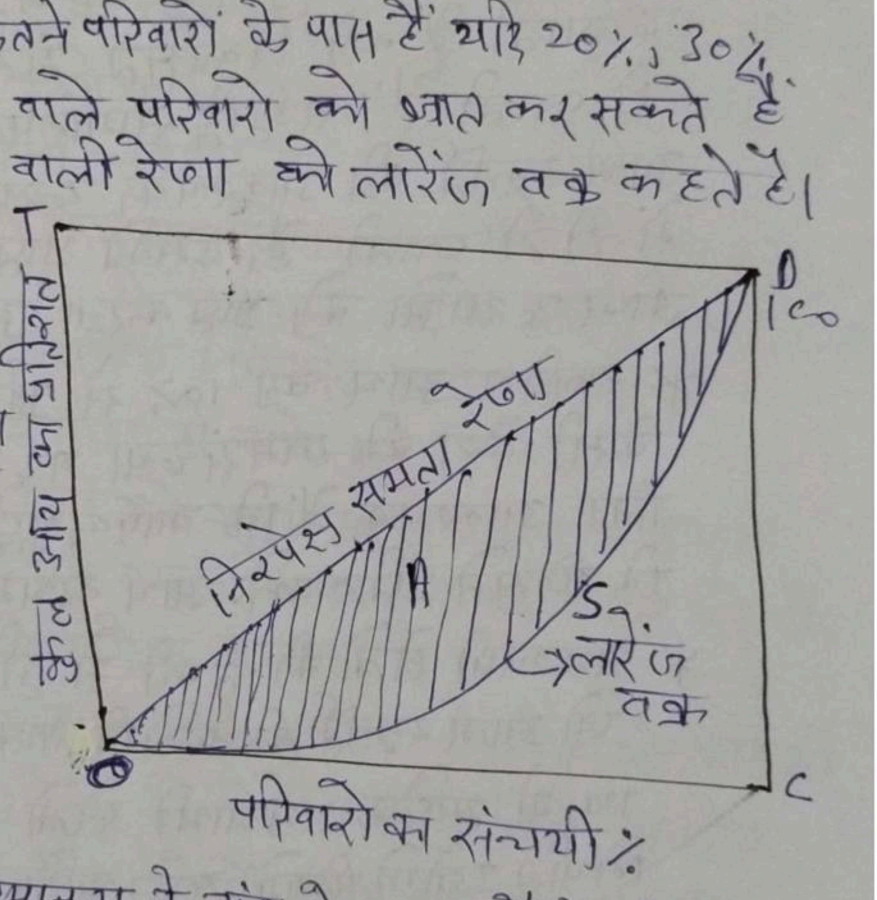

लारेंज वक्र आय की असमानता के अंश को बताता हैं चित्र में OT आय को आकार % में एवं OC अक्ष पर परिवार या जनसंख्या का संचयी % दिखाया गया है। OD पूर्ण समानता रेखा है OCD पूर्ण असमानता रेखा है OSD लारेंज वक्र हैं जो आय की असमानता का सूचक हैं OD एवं OSP का क्षेत्रफल गिनी गुणांक अनुपात या संकेन्द्रण अनुपात हैं जो आय की असमानता का माप है। जब OSD वक्र दायी ओर खिसकता हैं तो असमानता बढ़ती हैं जब यह बायी ओर OD की ओर खिसकता हैं तो असमानता घटती हैं।

(23)

समावेशी विकास क्या है स्पष्ट कीजिए

Explain what is Inclusive Growth

समावेशी विकास की अवधारणा ~~मुख्यतया~~ मुख्यतः आर्थिक विकास से समाज के लोगो का कल्याण अधिक करना है। यह विकास की एक ऐसी रणनीति की संकल्पना पर आधारित है, जो सभी को विशेष रूप से जो गरीब तथा विकास के लाभ से वंचित हैं विकास की मुख्य धारा में समाज के सबसे निचले पायदान पर रहने वाले ~~व~~ व्यक्ति को भी जोड़ने से सम्बधित है। समावेशी विकास विकास का वितरणात्मक पहलू है जो उच्च आर्थिक वृद्धि दर से अर्थव्यवस्था का अधिक बड़ा वर्ग जो गरीब तथा जीवन की आवश्यक आवश्यकताओ की संतुष्टि से भी वंचित हैं लाभांवित हो रहा है या नहीं। एक राष्ट्र जो समावेशी विकास चाहता है वह देखता है कि क्या आर्थिक वृद्धि से उत्पन्न लाभ अधिकांशतया छोटे भाग को प्राप्त हो रहा है, या जनसंख्या के व्यापक भाग को प्राप्त हो रहा है। 11वीं पंचवर्षीय योजना में समावेशी विकास पर बल दिया गया। इस प्रकार आर्थिक विकास की मुख्य धारा में सबको जोड़ने या सम्मिलित करना जिससे आर्थिक विकास से सभी लोग समान रूप से लाभान्वित हो सके, कोई वर्ग की ओट में न रह जाय, समावेशी विकास कहते हैं।

(27)

रोजेन्स्टीन रोडाँ का प्रबल धक्का सिद्धान्त में अभिभाज्यताएँ का उल्लेख किजिए।

Explain the role of indivisibilities in Rosenstein Rodan's Big Push theory.

प्रबल धक्का सिद्धान्त का प्रतिपादन प्रो० RN रोजेस्टीन रोडाँ ने किया जो संतुलित विकास प्रत्यागम का मूल है रोडाँ ने बताया कि अल्प विकसित देशों में आर्थिक विकास के मांग तथा पूर्ति दोनों पक्षों पर कुछ अभिभाज्यताएं व्याप्त रहती हैं जिसके कारण यह देश पिछड़ेपन के भंवर में फंसे रहते हैं इन देशों को पिछड़ेपन के भँवर से बाहर निकालने के लिए यह आवश्यक है बहुत अधिक मात्रा में एक साथ विनियोजन के द्वारा प्रबल प्रयास किया जाय बिना प्रबल प्रयास से इसे तोड़ा नहीं जा सकता है यह प्रतिपादन इस मान्यता पर आधारित है थोड़ी-थोड़ी मात्रा में विनियोग किया जाय तो इसका कोई प्रभाव आर्थिक विकास पर नहीं पड़ेगा पिछड़ेपन का गुरुत्वाकर्षण इसे अल्पविकसित संस्थिति से बाहर नहीं निकलने देगा और एक प्रकार से यह दुर्लभ साधनो का अपव्यय मात्र ही होगा।

प्रो० रोडाँ ने बताया कि मांग तथा पूर्ति पक्ष पर सामान्यतः चार प्रकार की अभिभाज्यताएं होते हैं जिन्हें समाप्त करने के लिए बड़ी मात्रा में निवेश की आवश्यकता होती है।

(i) पूंजी की अभिभाज्यता :-

किसी भी अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास विभिन्न उद्योगों में सृजित विनियोग के अवसर पर निर्भर करता है और यह अर्थव्यवस्था में उपलब्ध लाभ लागत के रूप में शक्ति, ऊर्जा, यातायात, संवहन, बिजली, जल, टेलीफोन, पोस्टल सेवा, बैंक आदि की मात्रा या सामाजिक उपपरिव्यय पूंजी पर निर्भर करते हैं। रोडाँ के अनुसार पूर्ति पक्ष पर सबसे अधिक अभिभाज्यताएं सामाजिक उपपरिव्यय पूंजी के ही संदर्भ में दिखायी पड़ती हैं।

सामान्यतया इनका आवश्यक न्यूनतम आकार बहुत बड़ा होता हैं भले ही उतनी मात्रा में इनका प्रयोग शुरु में नहीं हो ऐसी स्थिति में इनकी निष्क्रिय उत्पादन क्षमता बनी रहती हैं उससे बचा ही नहीं जा सकता हैं पर अर्थव्यवस्था में अन्य उत्पादक विनियोग की प्रेरणा तथा सफलता के लिए सामाजिक उपरिव्यय पूंजी में विनियोग में पूंजी आवश्यक हैं इनमें फलन अवधि लम्बी होती हैं चूंकि सामाजिक उपरिव्यय पूंजी के आकार को एक न्यूनतम आकार से कम नहीं किया जा सकता या इनका आकार अभिभाज्य होता हैं। तथा इनको बाहर से आयात नहीं किया जा सकता हैं इसीलिए रोडां ने सामाजिक उपरिव्यय की पूंजी को विकसित करने के लिए एक बारगी बड़ी मात्रा में निवेश या प्रबल धक्का पर बल दिया।

मांग की अभिभाज्यता :-

रोडां के मूल लेख में मांग की अभिभाज्यता पर बल दिया गया हैं और बताया कि अल्पविकसित देशो की प्रति व्यक्ति आय कम होती हैं, इसीलिए क्रयशक्ति भी कम होती हैं इसीलिए इनके बाजार का आकार छोटा होता हैं यदि कोई एक फैक्ट्री खोला जाय तो वह कितनी ही उन्नत तकनीक से युक्त हो बाजार के अभाव में असफल हो जायेगी। पर, यदि एक साथ अनेक कारखाना खोल दी जाय तो चूंकि इनमें श्रम करने वाले लोग परस्पर एक दूसरे की उत्पादित वस्तुओं की मांग करने वाले उपभोक्ता होंगे इसीलिए अनेक कारखाना खोलने के साथ ही मांग भी सृजित हो जायेगी। और औद्योगिकरण तथा विकास सम्भव हो जायेगा। रोडां ने ऐसा करने के लिए एक साथ अनेक कारखानो में विनियोग या प्रबल धक्का पर बल दिया और अपने प्रसिद्ध जूते की फैक्ट्री का उदाहरण दिया माना एक बन्द अर्थव्यवस्था हैं जिनमें एक जूते की फैक्ट्री खोली जाती हैं जिसमे रोजगार में 100 आदमी को लगाया जाता हैं। जो प्रच्छन्न रूप से बेरोजगार हैं तथा जिनकी सीमान्त उत्पादकता शून्य हैं। इन श्रमिको की श्रमिको को प्राप्त होने वाली मजदूरी इनकी अतिरिक्त आय होगी यदि रोजगार में लगे श्रमिक

अपनी सम्पूर्ण अतिरिक्त आय जूते पर खर्च कर दे जिन्हे इन्होने बनाया है तो जूता उद्योग के लिए बाजार मिल जायेगा और सम्भवतः यह जीवित भी रह जाय पर ऐसा नही होगा क्योंकि श्रमिक अपनी सम्पूर्ण आय जूते पर खर्च नही करेगा जिससे जूते के बाजार का विस्तार इतना आसान नहीं होगा। अतः पर्याप्त बाजार नही पा सकने के कारण जोखिम के कारण निवेश हतोत्साहित होगा और फैक्ट्री बंद हो जायेगी इससे बचने के लिए अधिक उचित होगा कि यदि जूते की एक फैक्ट्री में 100 श्रमिकों को रोजगार देने पर 10000 दस हजार श्रमिकों को 100 ऐसी फैक्ट्री में रोजगार दे जो परस्पर ऐसे श्रम वस्तुओं का निर्माण करे। जिन पर रोजगार में आये हुए श्रमिक अपनी अधिकांश आय व्यय कर दे।

जूते की फैक्टी का उदाहरण

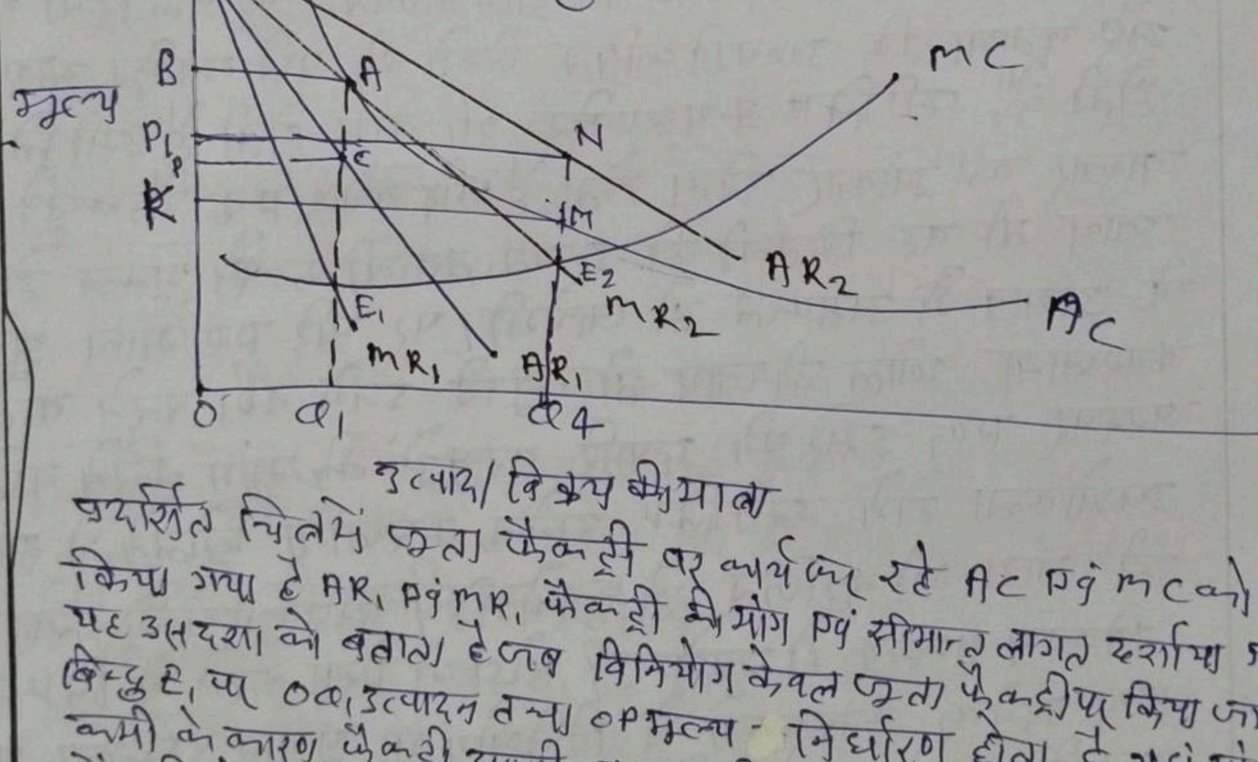

प्रदर्शित चित्र में जूता फैक्ट्री पर कार्य कर रहे AC एवं MC को प्रदर्शित किया गया है AR_1 एवं MR_1 फैक्ट्री की मांग एवं सीमान्त लागत दर्शाया गया है। यह उस दशा को बताता है जब विनियोग केवल जूता फैक्ट्री पर किया जाता है बिन्दु E_1 पर OQ_1 उत्पादन तथा OP मूल्य - निर्धारण होता है यहां मांग की कमी के कारण फैक्ट्री अपनी लागत नही प्राप्त कर पाती है जिससे PCAB मात्रा में हानि होती है। यदि एक साथ कई उद्योग लगाने से जिससे जूते की मांग बढ़ जाती है। बाजार का विस्तार हो जाता है जहां मांग वक्र AR_2 एवं और MR_2 हो जाती है जहां उत्पादन OQ_4 एवं कीमत OP_1 होगी जहां फैक्ट्री अपनी लागत पूरी कर लेती है और फैक्ट्री को P_1NMK लाभ भी अर्जित करेगी।

3 - बचत पूर्ति की अभिमान्यता

4 मनोवैज्ञानिक अभिमान्यता

(27)

मानव विकास सूचकांक
Human Development Index

किसी देश के लोग ही राष्ट्र के वास्तविक धन तथा सम्पत्ति हैं मानव कल्याण तथा मानव विकास वे प्रमुख लक्ष्य हैं जिसे प्रत्येक देश प्राप्त करने का प्रयास करता हैं सर्वप्रथम 1990 में यूनाइटेड नेशनल डेवेलपमेंट प्रोग्राम (UNDP) ने प्रकाशन किया गया यह मानव विकास की दिशा में एक नये तथा ऐतिहासिक कदम की शुरुआत था

मानव विकास सूचकांक (HDI) निर्माण करने में प्रमुख अर्थशास्त्री जो UNDP से जुड़े हुए महबूब उल हक तथा उनके अनेक सहयोगी अन्य अर्थशास्त्री प्रमुखतः A. के सेन तथा सिंगर हंस का प्रमुख योगदान रहा हैं।

मानव विकास सूचकांक तीन प्रमुख चरो पर आधारित हैं।

1- स्वास्थ्य (Health) व जीवन प्रत्याशा
2 शिक्षा (Education
3 प्रति व्यक्ति आय (Per capita income)

इन तीनो की अलग-अलग विस्तार सूचकांक निकला जैसे जाता हैं

$$\text{आयाम सूचकांक} = \frac{\text{वास्तविक मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}{\text{अधिकतम मूल्य} - \text{न्यूनतम मूल्य}}$$

जीवन प्रत्याशा, शिक्षा का स्तर एवं प्रति व्यक्ति आय इन तीनो का अंकगणित औसत ही HDI कहा जाता है

$$HDI = \frac{1}{3}(\text{जीवन प्रत्याशा} + \text{शिक्षा} + \text{प्रति व्यक्ति आय})$$

HDI का मूल्य 0-1 के बीच में होता हैं अधिकतम मूल्य 1 के बराबर होता हैं।

आर्थिक विकास के घटक स्पष्ट कीजिए -

प्रत्येक देश की आर्थिक समृद्धि अनेक घटको से प्रभावित होती है: -

प्राकृतिक संसाधन :- प्राकृतिक संसाधनो से आशय उन समस्त भौतिक संसाधनो से हैं जो प्रकृति की ओर से किसी देश को उपहार स्वरूप प्राप्त होता है जैसे भूमि, खनिज पदार्थ, वन एवं जल सम्पदा, वर्षा जलवायु, मिट्टी की बनावट भौगोलिक आदि यह प्राकृतिक साधन देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मानवीय संसाधन या श्रम किसी देश में रहने वाली कार्यशील जनसंख्या से हैं। श्रम को उत्पादन का एक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन साधन माना जाता हैं मानवीय श्रम ही वह शक्ति है जिस पर देश का आर्थिक विकास निर्भर करता हैं मानव संसाधन विकास किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध मानव पूंजी के स्टॉक तथा संचय की दर पर निर्भर करता हैं विकासशील देशो में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव के विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता। यही कारण हैं कि इन देशो में विकास के वांछित लक्ष्य प्राप्त नहीं प्राप्त हो पाते हैं। पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक पूर्व आवश्यकता हैं जब तक राष्ट्र में पर्याप्त मात्रा में पूंजी निर्माण नहीं होगा तब तक आर्थिक विकास का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता हैं। उद्यमशीलता किसी देश के आर्थिक विकास पर उस देश के संगठनात्मक ढांचे पर का भी प्रभाव पड़ता हैं। वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी ज्ञान तथा नवीन खोजो का आर्थिक विकास की दृष्टि से तब तक कोई महत्व नहीं है जब तक उन्हें व्यवहारिकता में न लाया जाय। तकनीकी प्रगति एवं नवप्रवर्तन पर जोर से किसी देश की अर्थव्यवस्था का ढांचा मजबूत होता हैं। इसके अलावा विदेशी पूंजी, अवस्थापना, राजनीतिक घटक, सामाजिक तथा धार्मिक घटक आदि पर निर्भर करता हैं।

The Role of Education and Research in Economic Development:

आर्थिक विकास में शिक्षा एवं शोध की भूमिका :-

किसी देश का आर्थिक विकास उसके कार्यकुशल, शिक्षित एवं प्रशिक्षित श्रम शक्ति पर निर्भर करता है। आर्थिक विकास एक यांत्रिक क्रिया मात्र ही नहीं वरन अंतिम रूप से यह एक मानवीय उपक्रम है अन्य मानवीय उपक्रमों की भांति इसका परिणाम इसका परिणाम सही अर्थों में इसको संचालित करने वाले जन समुदायों की कुशलता, गुणों एवं प्रवृत्तियों पर निर्भर करता है। यदि किसी देश की जनसंख्या उसके आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप है और उसके निवासी विवेकशील, परिश्रमी, शिक्षित, व कार्यदक्ष हैं तो निसंदेह अन्य बातों के समान रहने पर उस देश का आर्थिक विकास अधिक होगा।

आर्थिक विकास की दृष्टि से भौतिक पूंजी की अपेक्षा मानवीय पूंजी को अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है क्योंकि मानवीय संसाधनों की कुशलता एवं दक्षता पर ही आर्थिक विकास का ढांचा खड़ा किया जा सकता है। यदि किसी देश के पास पर्याप्त व श्रेष्ठतम मानव पूंजी उपलब्ध है तो उस देश की भौतिक पूंजी और भी अधिक उत्पादक बन जाती है। इसके विपरित यदि मानव पूंजी का अभाव है तब भौतिक पूंजी का लाभपूर्ण उपभोग नहीं हो सकता। क्योंकि ऐसी हालात में चलती हुई मशीने रुकने लगती है उपकरण समय से पूर्व घिसने लगते हैं उपज की किस्म व उत्पादकता का स्तर गिर जाता है। आर्थिक पिछड़ापन दूर करने और प्रगति, क्षमता व प्रोत्साहन उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि लोगो के ज्ञान व कुशलता में वृद्धि की जाय। वास्तव में मानव साधन के गुण में सुधार किए बिना अल्पविकसित देशों में कोई प्रगति सम्भव नहीं है।

आर्थर लुइस का द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था वृद्धि मॉडल स्पष्ट कीजिए।

Explain Arthur Lewis's Two-Sector model of Economic growth

प्रो० लुइस ने श्रम की असीमित पूर्ति से आर्थिक विकास का व्यवस्थित सिद्धान्त प्रस्तुत किया है इस सिद्धान्त में यह माना गया है कि अल्पविकसित देशों में जीवन निर्वाह मजदूरी पर श्रम की असीमित पूर्ति उपलब्ध है श्रम को निर्वाह क्षेत्र से हटाकर पूंजीवादी क्षेत्र में लगाने से पूंजी संचय होता है जो आर्थिक विकास में सहायता देता है निर्वाह क्षेत्र वह भाग माना जाता है जो पुनः उत्पादित होने वाली पूंजी का प्रयोग नहीं करता। यह क्षेत्र लाभ अर्जित करने हेतु मजदूरी देकर श्रमिकों को कार्यों में लगाता है यहां पर प्रति व्यक्ति पूंजीवादी क्षेत्रों की अपेक्षा कम रहता है।

लुइस के अनुसार अर्द्धविकसित देशों में द्वैत अर्थव्यवस्था होती है जिसे द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है। एक ओर देश में पूंजीवादी क्षेत्र होता है जिसमें उत्पादकता पूंजी तथा आय का आधिक्य होता है दूसरा क्षेत्र पिछड़ा क्षेत्र है जिसे प्राथमिक क्षेत्र या जीवन निर्वाह क्षेत्र कहते हैं। इस क्षेत्र में पूंजी, उत्पादकता तथा आय की कमी रहती है इस क्षेत्र में छोटी खेती, नये यन्त्र से आधारित कृषि कार्य होते हैं। वहीं छोटे उद्योग तथा आधुनिकरण से संचालित वृहद उद्योग भी कार्यरत होते हैं। साथ ही समाज में शिक्षित, अर्थ अशिक्षित, कुशल तथा अकुशल, प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित सभी प्रकार के व्यक्ति मौजूद रहते हैं इसप्रकार लुइस का विश्वास है कि इन देशों में अपनी असीमित श्रमशक्ति का उपयोग करके ही विकास की प्रक्रिया चलायी जा सकती है।

(31)

पूँजी निर्माण का अर्थ समझाइए।

[Explain the meaning of capital formation]

एक दी हुई समयावधि में किसी अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टाक में वृद्धि उस समयावधि में पूंजी निर्माण कहलाती हैं, जैसे यदि किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्टाक की कुल मात्रा K हो और एक वर्ष बाद उसकी पूंजी बढ़कर K_1 हो जाय तो $K_1 - K$ जिसे ΔK कह सकते हैं उस वर्ष में पूंजी निर्माण कहलायेगा। अर्थात पूंजी निर्माण से आशय एक दी हुई समयावधि में अर्थव्यवस्था के वर्तमान साधनो अथवा कुल आय के उस भाग से हैं जिसका प्रयोग वह अर्थव्यवस्था में उपभोग व्यय पर न करके पूंजीगत वस्तुओं के निर्माण पर करती हैं जिससे उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ जाय।

$S = Y - C$ जहां S = बचत, Y = आय, एवं C = उपभोग हैं। जहां बचत S पूरी मात्रा विनियोग हो जायेगी (S = I) जिससे पूंजी स्टाक बढ़ जायेगा। प्रो० डी ब्राइट ने कहा हैं पूंजी स्टाक में निम्नांकित आयेंगे · भूमि से सम्बधित निर्माण या सुधार, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक उत्पादो के हाथ में मशीन तथा यन्त्र, व्यापारिक उद्यमो के हाथ में कच्चे माल का स्टाक आदि पूंजी से आशय यह भी हैं कि मनुष्य द्वारा निर्मित उन सभी वस्तुओं से हैं जो उत्पादन में प्रयुक्त होती हैं ये उत्पादन क्रिया में समाप्त नहीं हो जाती हैं जैसे-मशीन, प्लांट, भवन आदि देश की अपनी मुद्रा पूंजी नही हैं पर विदेशी मुद्रा पूंजी होगी पूंजी आर्थिक को निर्धारित करने वाले कारको में सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं 8 यह अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय के स्तर उत्पादन का ढांचा, तकनीकी प्रगति, उत्पादन क्षमता आदि का निर्धारण करती हैं इसप्रकार पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता हैं तथा यह आर्थिक विकास का प्रधान-चालक तत्व हैं। वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी अर्थव्यवस्था में पूंजी स्टाक में वृद्धि लायी जाती हैं उसे हम पूंजी निर्माण कहते हैं।

(32)

तकनीकी प्रगति क्या हैं स्पष्ट कीजिए।

(Explain what is Technological progress)

उत्पादन का तरीका जो उत्पादन की इकाई को प्राप्त करने के लिए साधनो का संयोग प्रदर्शित करता हैं जैसे पूंजी की की 1 इकाई तथा श्रम की 3 इकाई से वस्तु की एक निश्चित मात्रा प्राप्त करना, तकनीक या प्रविधि कहलाता हैं उत्पादन की तकनीक या प्रविधि में सुधार तकनीकी प्रगति कहलाती है।

तकनीकी प्रगति का आशय हैं उत्पादन क्रिया में उन्नत तकनीक का प्रयोग। जिसके अन्तर्गत न केवल मशीन को लेते हैं जो निश्चित रूप से उत्पादन में प्रत्यक्ष योगदान करती हैं बल्कि इसका सम्बन्ध टेक्नालाजी से सम्बधित मानव कुशलता, संगठनात्मक ढांचा तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर या टेक्नालाजी से सम्बधित सूचनाओं से भी हैं। टेकनालाजीकल प्रगति के लिए शोध तथा विकास में बहुत अधिक विनियोग, कुशल उद्यमी जो नव प्रवर्तित टेक्नालाजी की व्यापारिक सम्भावना तथा जोखिम का अनुमान लगा सके। यह तीन प्रकार की होती है।

1 - तटस्थ तकनीकी प्रगति तब होती हैं जबकि उच्चतर उत्पादन के स्तर की प्राप्ति साधनों की उसी मात्रा तथा उसी संयोग से हो सके जो पहले थी -

2 श्रम बचत तकनीकी - जब उच्चतर उत्पादन के स्तर को इतनी ही या उससे कम श्रम की मात्रा से प्राप्त किया जा सके जो पहले था।

3 पूंजी बचत करने वाली तकनीकी - जब उच्चतर उत्पादन के स्तर को इतनी ही या उससे कम पूंजी की मात्रा में के द्वारा प्राप्त किया जा सके जो पहले थी।

अल्पविकसित देशों में जनसंख्या विस्फोट की समस्या को स्पष्ट कीजिए।

Explain the problem of population explosion in under development countries.

संयुक्त राष्ट्र संघ 2025 रिपोर्ट के अनुसार विश्व की जनसंख्या 8.2 अरब को पार कर चुकी हैं जनसंख्या के संदर्भ में विश्व की बात किया जाय तो 1830-1930 इन 100 वर्षों में जनसंख्या दोगुनी हो गयी 1960 तक यह 3 अरब तक पहुँच गयी 1975 तक 5 अरब एवं 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या 5 अरब के बिन्दु को पार कर गई थी। जनसंख्या विस्फोट की अवस्था में आय में वृद्धि होने लगती हैं, शिक्षा, स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं का क्षेत्र व्यापक हो जाता है जिससे मृत्यु दर में गिरावट आ जाती हैं और जन्म दर या तो स्थिर रहती हैं या मामूली गिरावट आ पाती हैं जन्म दर को प्रभावित करने वाली धार्मिक, सामाजिक, तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों में परिवर्तन नहीं होता हैं इस प्रकार जन्म दर ऊँची एवं मृत्यु दर नीची रहती हैं जिससे जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होती हैं इसे जनसंख्या विस्फोट कहा जाता हैं। कि अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से यह स्थिति घातक होती हैं इससे क्षेत्रीय असंतुलन बिगड़ जाती हैं। अर्थव्यवस्था में निम्न प्रकार से बाधक होती है -

* प्रति व्यक्ति आय में कमी
* जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति में संतुलन
* जनसंख्या और पूंजी निर्माण की गति मंद
* अनुत्पादक उपभोक्ता का अत्यधिक भार
* स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं आवास पर अत्यधिक भार
* जीवन स्तर का गिरना
* कीमत स्तर में वृद्धि एवं भुगतान संतुलन की समस्या
* बेरोजगारी में वृद्धि
* पर्यावरणीय ह्रास

बाजार असफलता का आशय स्पष्ट कीजिए
(Explain the Market failures) (34)

किसी वास्तविक अर्थव्यवस्था में स्वतन्त्र बाजार अर्थव्यवस्था की उपर्युक्त सभी विशेषताओं का पाया जाना असम्भव है। अनेक क्षेत्रों में एकाधिकार की मौजूदगी, बाह्य प्रभावों की उपस्थिति, ह्रासमान लागत, सार्वजनिक वस्तुओं की आवश्यकता, गतिशीलता का प्रभाव रहता हैं।
जिन परिस्थितियों के कारण स्वतन्त्र बाजार अर्थव्यवस्था, आर्थिक कुशलता या सामाजिक कल्याण को प्राप्त करने में असफल रहता हैं, उन्हे बाजार असफलताएं कहते हैं।
बाजार असफलता के कारण ही सार्वजनिक नीति की आवश्यकता होती हैं जिससे अर्थव्यवस्था को नेतृत्व प्रदान किया जा सके, उसके दोषों को दूर किया जा सके तथा जहां आवश्यक समझो जाये पूरक के रूप में कार्य करें। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनो पर निजी स्वामित्व होता है और उत्पादन भी निजी उद्यम करते हैं इसीलिए इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में बाजार-तंत्र या कीमत तंत्र सरकार के किसी निर्देश व नियन्त्रण के बिना अर्थव्यवस्था को संचालित करती रहती हैं पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उपभोक्ताओं और उत्पादकों के बीच जो प्रतियोगिता रहती हैं वह वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग एवं पूर्ति के बराबर करती हैं। उल्लेखनीय है कि वास्तविक जीवन में बाजार विफलता ही अधिक दृष्टिगोचर होती हैं जिन परिस्थितियों के कारण स्वतन्त्र बाजार अर्थव्यवस्था आर्थिक कुशलता या सामाजिक कल्याण को प्राप्त करने में असफल रहता हैं उन्हे बाजार की विफलता कहते हैं।

आर्थिक समृद्धि का आशय
Meaning of Economic growth

आर्थिक समृद्धि से हमारा आशय राष्ट्रीय आय या उत्पादन में दीर्घकालीन वृद्धि से है जब किसी देश की अर्थव्यवस्था में GDP में वृद्धि, राष्ट्रीय आय में वृद्धि, तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही हो तो उसे आर्थिक समृद्धि कहा जाता है अर्थात आर्थिक समृद्धि एक परिमाणात्मक संकल्पना है प्रो० चार्ल्स किण्डलबर्गर के अनुसार "आर्थिक समृद्धि का अर्थ अधिक उत्पादन से है।" आर्थिक समृद्धि से आशय एक ऐसी प्रक्रिया से है जिससे दीर्घकाल में वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। आर्थिक समृद्धि की दर धनात्मक के साथ-साथ कभी-कभी ऋणात्मक भी हो सकती है। आर्थिक समृद्धि की धारणा आर्थिक दृष्टि से ऐसे उन्नत देशों के लिए उपयुक्त है जहां पर संसाधन पर्याप्त और विकसित है।

आर्थिक समृद्धि का अर्थ आय या उत्पादन में दीर्घकालीन वृद्धि लेकिन उत्पादन के मूल्य या आय में वृद्धि निम्न कारणों से हो सकती है

i- उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से है परन्तु उनकी कीमत स्थिर रहती है

ii जब वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में वृद्धि होती है परन्तु उनका उत्पादन स्थिर रहती है।

आर्थिक समृद्धि वस्तुओं की मात्रा में वृद्धि होने वाली वृद्धि से है अर्थात उस वृद्धि से है जो कीमतो के स्थिर रहने पर वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि होने के कारण उत्पन्न होती है।

(36)

श्रम बचत तकनीकी को स्पष्ट कीजिए।
(Explain the Labour. Saving Technical)

एक तकनीकी परिवर्तन उस समय श्रम बचतकारी होता है जब दिये गये उत्पादन में पूंजी की अपेक्षा कम श्रम श्रम लगता है अन्य शब्दो में एक तकनीकी परिवर्तन तब श्रम बचत कारी माना जाता है जबकि वह श्रम की अपेक्षा पूंजी के सीमान्त उत्पादन को एक, स्थिर श्रम अनुपात पर बढ़ाता है तकनीकी परिवर्तन यह प्रकट करता है कि दिया गया उत्पादन श्रम तथा पूंजी की पहले से कम मात्रा द्वारा उत्पादित किया जा सकता है जिससे परिवर्तन के बाद समोत्पाद वक्र (t_1) मूल समोत्पाद वक्र (t) के नीचे सरक जाता है

चित्र में श्रम बचतकारी तकनीकी परिवर्तन को दर्शाया गया है जब t तकनीकी प्रगति के पूर्व तथा t_1 तकनीकी प्रगति के बाद का समोत्पाद वक्र है समोत्पाद वक्र t_1 के बिन्दु B पर एक दिये गये पूंजी श्रम अनुपात पर पूंजी की अपेक्षा कम श्रम चाहिए।

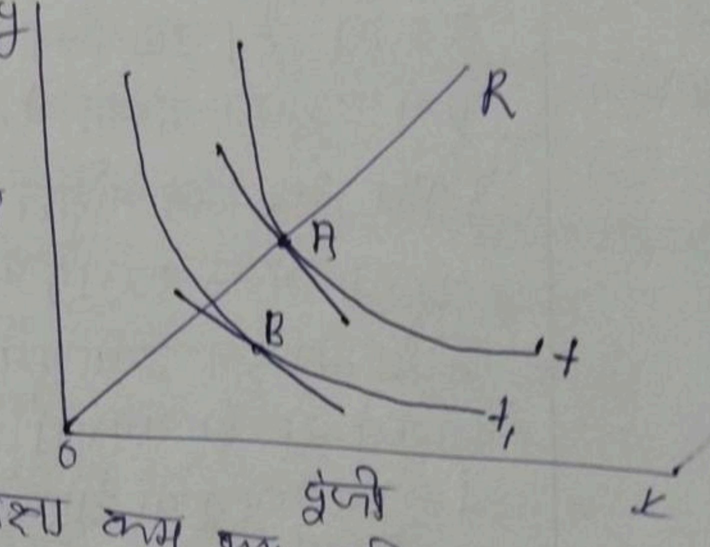

स्पष्ट है कि इस प्रकार का तकनीकी परिवर्तन अपेक्षाकृत श्रम-बचतकारी होता है यदि लगाया गया श्रम पूर्णतः कम कर दिया जाये तथा पूंजी को बढ़ा दिया जाय तो तकनीकी परिवर्तन पूर्णतः श्रम बचतकारी तथा पूंजी उपयोगी होता है।

विकासशील देश किसे कहा जाता हैं।
(What is Means of Development Countries)

ऐसी अर्थव्यवस्थाएं जो आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी हैं जिनमें विकास की सम्भावनाएँ विद्यमान हैं जिनमें अल्प विकास की समस्या हैं जिनकी आय व प्रति व्यक्ति आय निम्न तथा जनसंख्या वृद्धि उच्च स्तर की हैं अल्प विकसित देशो का जीविकोपार्जन का मुख्य साधन कृषि हो उन्हे विकासशील देश कहा जाता हैं इन देशो में भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश, श्रीलंका, चीन, म्यामार आदि देश आते हैं। इन देशो को तीसरे दुनिया (Third world) या दक्षिण देश कहते हैं। UNO ने अल्पविकसित देश को विकासशील अर्थव्यवस्था शब्द का प्रयोग किया। विकासशील देशो के लिए दक्षिण (South) तथा विकसित देशो के लिए उत्तर (North) शब्दो का प्रयोग किया जाता हैं इसका मुख्य कारण आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड को छोड़कर विश्व के अधिकांश धनी देश उत्तर में स्थित हैं जबकि निर्धन देश दक्षिण में स्थित हैं इन अर्थव्यवस्थाओं चार दुनिया में बांटा गया हैं।

1- पहली दुनिया का देश (First world) → विकसित देश होते हैं।
2- दूसरी दुनिया के देश (Second world) → रूस तथा कम्युनिस्ट अर्थव्यवस्था के देश
3 तीसरी दुनिया (Third world) → अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के देश
4 चौथी दुनिया (Fourth world) → जिन देशो के आर्थिक विकास अत्यन्त कम है।

प्रबल धक्का से बाह्य मितव्ययिताओं का विकास - (38)

Big push to creation of External Economic

अर्द्ध विकसित देशों में सहायक आर्थिक व सामाजिक संरचना का अभाव रहता है फलतः निजी विनियोग प्रेरणाहीन और प्रयासहीन होते हैं चूंकि आर्थिक व सामाजिक संरचना के निर्माण में विनियोग अनुत्पादक और लाभरहित होता है इसीलिए निजी व्यक्तियों की रुचि इस ढांचे के विस्तार में नहीं रहती है। आवश्यक आर्थिक संरचना के अभाव में संतुलित विकास सम्भव नहीं है आर्थिक एवं सामाजिक संरचना का निर्माण अर्थात बाह्य मितव्ययिता के निर्माण के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी विनियोग की आवश्यकता होती है इसीलिए सरकार को स्वयं ही इस ओर ध्यान देना चाहिए।

यदि अर्थव्यवस्था में बाह्य मितव्ययिताएं विद्यमान हो तो नये साहसी उपक्रम लगाना प्रारम्भ कर देंगे। कई नए स्थानों पर साहसी अपने उपक्रमो का विस्तार करेंगे, लाभ की मात्रा अधिक होने के कारण विदेशी एवं घरेलू विनियोग कर्ता पूंजी लगाना प्रारम्भ कर देंगे। यदि कुछ उद्योग समानान्तर स्थापित होंगे तो एक दूसरे पर तकनीकि निर्भरता भी बढ़ सकेगी इस अनुपूरकता के आधार पर दुश्चक्रो को तोड़ा जा सकेगा।

प्रो० रोडॉ के उत्पादन फलन में अभिभाज्यता स्पष्ट कीजिए - (39)

(Explain Indivisibility in Pro Rodan Production function)

अर्द्ध विकसित देशो में उत्पादन फलन में बहुत सी अभिभाज्यताएँ पाई जा सकती हैं किन्तु सामाजिक उपरि पूंजी की अभिभाज्यता उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है अपनी अभिभाज्यता के कारण इस प्रकार का विनियोग वाह्य बचतो तथा बढ़ते हुए प्रतिफल का एक बड़ा स्रोत हो सकता है अभिभाज्यता का एक मुख्य कारण सामाजिक उपरिव्यय पूंजी है। सामाजिक उपरिव्यय से सम्बंधित सेवाएं जैसे जल व्यवस्था, संवादवाहन, शक्ति व्यवस्था, यातायात का प्रबन्ध आदि ऐसी सेवाएं हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से अत्यधिक उत्पादक होती हैं और इनकी आयु भी अधिक होती हैं इनका आयात भी सामान्यतः सम्भव नहीं होता है इन सामाजिक उपरिव्यय सेवाओं के विकास के लिए काफी बड़ी मात्रा में विनियोजन की आवश्यकता पड़ती है। यह हो सकता है विकासशील देशों में इनकी पूरी क्षमता का प्रयोग कुछ समय तक न हो सके लेकिन अन्य उद्योगों के लिए विकास के लिए इनका समुचित प्रबन्ध आवश्यक होता है इस प्रकार के विनियोग से प्रतिफल काफी समय के बाद मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक अर्थव्यवस्था में सामाजिक उपरिव्यय सेवाओं का प्रबन्ध दीर्घकालीन विकास के लिए पहली शर्त है और इनके प्रबन्ध के लिए बड़े पैमाने पर विनियोजन (प्रबल धक्का) की आवश्यकता पड़ती है।

संतुलित विकास का अर्थ समझाइए। (40)

Explain the Meaning of Balanced growth

संतुलित विकास का आशय यह है कि एक विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगो को एक साथ विकसित करना चाहिए जिससे विकास प्रक्रिया में कठिनाइयां उत्पन्न न हो कृषि, उद्योग, परिवहन आदि सभी का एक ही समान विकास होना चाहिए।

प्रो० नर्क्स के अनुसार "संतुलित विकास अन्त में संतुलित भोजन की आवश्यकता पर निर्भर है।"

प्रो० लेविस के अनुसार "विकास कार्यक्रमो में अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रो को एक साथ विकसित करना चाहिए जिससे कि उद्योग एवं कृषि तथा घरेलु उत्पादन तथा निर्यात के लिए उत्पादन में उचित संतुलन स्थापित किया जा सके।"

अर्थात संतुलित विकास से आशय अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो का एक साथ तथा एक सा विकास करना है जिससे सभी क्षेत्र समानता लिये हुए विकसित हो। इसके समर्थक एडम स्मिथ, नर्क्स, आर्थर लुइस रोडॉ, एवं हार्वे लीबिन्स्टीन आदि प्रमुख अर्थशास्त्री है।

इसमें अर्थव्यवस्था के अन्दर एक साथ सभी उद्योग में विनियोग करना, बहुमुखी विकास हो, कृषि एवं उद्योग दोनो का समन्वय बैठाकर विकास करना साथ हो संतुलित विकास में पूंजी का सुव्यवस्थित उपयोग आवश्यक है। प्रो० नर्क्स ने कहा है कि जिस प्रकार शरीर के विकास के लिए संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार अर्थव्यवस्था के विकास के लिए भी एक साथ भारी मात्रा में विनियोग की आवश्यकता है।

सामाजिक आधारिकत या आधारभूत संरचना को स्पष्ट कीजिए। (41)

(Explain the Social Infrastructure)

सामाजिक आधारिक संरचना से आशय उन समी घटकों से है जो मानवीय पूंजी निर्माण में सहायक होते हैं जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास आदि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास सुविधाएं आदि मिलकर देश के सामाजिक आधारिक संरचना का निर्माण करते हैं जो उच्च उत्पादकता एवं मानवीय कुशलता के लिए उत्तरदायी होते हैं। मानवीय संसाधनों में विनियोग को मानवीय पूंजी निर्माण कहते हैं जबकि भौतिक पूंजी निर्माण से आशय भौतिक वस्तुएं जैसे मशीन, फैक्ट्री, भवन आदि वस्तुओं में एक वर्ष में की गई वृद्धि से है।

भारत जैसे विकासशील देशों के लिए मानवीय संसाधनो में निवेश अनिवार्य है प्रो० मार्शल ने कहा है कि "सभी प्रकार की पूंजी में मनुष्यों में निवेशित पूंजी सर्वाधिक मूल्यवान है।" मानव पूंजी निर्माण का महती भूमिका है। यह आर्थिक विकास की क्रियाओं का सम्पादन प्राकृतिक संसाधनो का विदोहन, पूंजी जुटाना, वस्तुओं की मांग प्रस्तुत करना, आर्थिक विकास की गति तेज करने के लिए देश को प्रशिक्षण प्राध्यापकों डाक्टरों, इंजीनियरों, अर्थशास्त्रीयों, प्रबन्धकों कलाकारो शिल्पकारो आदि की आवश्यकता होती है ये सब मानवीय पूंजी के ही अंग हैं।

रोस्टोव के ऐतिहासिक आर्थिक विकास के ऐतिहासिक चरण स्पष्ट कीजिए। (42)

Explain the Historical Stage of Economic Growth Rostows

रोस्टोव ने विकास की प्रक्रिया को पांच अवस्था में बांटा है -

1- परम्परागत समाज (The Traditional Society)

रोस्टोव के अनुसार पारम्परिक समाज एक कम विकसित समाज है जो न्यूटन के पूर्ववर्ती विज्ञान तथा टेकनोलाजी सीमित उत्पादन फलन तथा भौतिक संसार के प्रति न्यूटन से पूर्ववर्ती दृष्टिकोण पर विकसित है। पारम्परिक समाज में विज्ञान तथा तकनीकी के विकास का अभाव होता है उत्पादकता कम होती है तथा इसकी वृद्धि की सम्भावना भी नहीं है। इसलिए ऐसे समाज में श्रम शक्ति का अधिकांश (75% से अधिक) कृषि में लगा हुआ है इस समाज में परिवार सबसे प्रमुख संस्था है के रूप में कार्य करती है। राजनैतिक शक्ति जमींदारों के हाथ में केंद्रित होती है।

2- आत्म स्फूर्ति की पूर्ववर्ती अवस्था (The Pre conditions for Take off)

पारम्परिक समाज एवं आत्म स्फूर्ति के बीच की अवस्था को ~~कहा गया है~~ रोस्टोव ने आत्म स्फूर्ति की पूर्ववर्ती दशाएं कहा है। इसे पश्चिमी यूरोप में 17वीं शताब्दी के अंत में तथा 18वीं शताब्दी के शुरू में उस समय हुआ जब आधुनिक वैज्ञानिक खोजों का प्रयोग कृषि तथा उद्योग में किया जाने लगा। सामाजिक एवं राजनैतिक आधारभूत ढांचे में परिवर्तन आ जाये तथा उत्पादन की तकनीक में भी परिवर्तन आ जाय। इस दशा को प्राप्त करने के लिए विनियोग की दर राष्ट्रीय आय के 10% तक बढ़ा दी जाय। अधोसंरचना का निर्माण हो। कृषि प्रधान समाज में बदलाव लाकर औद्योगिक समाज हो। रोस्टोव ने इस बदलाव में साहसी की भूमिका पर बल दिया है।

3- आत्म स्फूर्ति की अवस्था (The Stage of take off)

रोस्टोव के अनुसार आत्म स्फूर्ति की अवस्था महत्वान्तर है। जबकि स्थिर समृद्धि की विरोधी प्राचीन शक्तियां पूर्णतया समाप्त हो जाती हैं। आर्थिक प्रगति लाने वाली शक्तियां जो आधुनिक क्रियाओं को बहुत सीमित उछाल दे पाती हैं और विकसित होती हैं तथा समाज में प्रभुत्वकारी हो जाती हैं। समृद्धि सामान्य दशा बन जाती हैं। आत्मस्फूर्ति की अनेक आवश्यक दशाएं लेकिन कम से कम तीन दशाएं हैं आत्म स्फूर्ति प्राप्त करने के लिए

i - राष्ट्रीय आय का 10 प्रतिशत से अधिक विनियोजन हो।
ii अग्रगामी क्षेत्रों की तेजी से वृद्धि हो।
iii सांस्कृतिक रूपरेखा

रोस्टोव ने इस बात पर बल दिया कि कोई भी अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थव्यवस्था में बदल पायेगी कि नहीं उसके बदलने में कितना समय लगेगा यह उस अर्थव्यवस्था के राजनैतिक, सामाजिक तथा संस्थागत ढांचे या रूपरेखा पर निर्भर करेगा।

4 - परिपक्वता की अवस्था (The Drive to Maturity)

रोस्टोव के अनुसार यदि सभी प्रक्रिया उपर्युक्त के अनुसार चलती जाय तो आत्मस्फूर्ति के बाद परिपक्वता की अवस्था प्राप्त हो जायेगी। यह एक ऐसी स्थिति होगी जिसमें अर्थव्यवस्था में आर्थिक समृद्धि तथा उच्च प्रति व्यक्ति आय निरन्तर प्राप्त होते जायेंगे। आधुनिक टेक्नोलाजी का प्रयोग सभी क्षेत्रों में व्याप्त हो जायेगा, राष्ट्रीय आय का 10-20 प्रतिशत से ऊपर भाग विनियोजित होता जायेगा स्टील उद्योग के विकास को परिपक्वता अवस्था का एक महत्वपूर्ण सूचक मानते हैं। औद्योगिक ढांचे में परिवर्तन के साथ-साथ समाज के ढांचे में भी परिवर्तन होगा जैसे श्रमशक्ति के बटवारा में परिवर्तन, शहरी जनसंख्या में वृद्धि, सफेदपोश श्रमिकों में वृद्धि तथा साहसी के स्थान पर प्रबन्धकों के हाथ में नेतृत्व।

परिपक्वता की अवस्था में राजनैतिक विशेषताएं भी महत्वपूर्ण होती हैं इसमें राजनैतिक निर्णय स्वयं समाज द्वारा लिये जाते हैं तथा संसाधनों का प्रयोग ~~अत्य~~ अत्यधिक उपभोग या जन उपभोग की ओर या कल्याणकारी राज्य की स्थापना में लगे। यह आत्म स्फूर्ति के 60 वर्ष बाद परिपक्वता की अवस्था प्राप्त होती हैं।

5 उच्च जन उपभोग की अवस्था
(The stage of high mass consumption)

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद बीसवी शताब्दी में उत्तरी अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोप में एक के बाद एक देशों सामान्य रूप से उच्च उपभोग की स्थिति प्राप्त की। इस अवस्था को सबसे पहले U.S.A ने 1920 में प्राप्त किया, ग्रेट ब्रिटेन ने 1930 में प्राप्त की। पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों ने इस अवस्था की प्राप्ति 1950 में की। इन सभी देशों की आटोमोबाइल, अर्धशहरी क्षेत्रों की ओर झुकाव, बहुत अधिक संख्या में विलासिता की वस्तुओं का उपभोग आदि प्रमुख विशेषता रही। इन अर्थव्यवस्थाओं नीचे के लोगो को छोड़कर लोगो में उपभोग के स्थान पर अवकाश को वरियता देने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। लोगो में वित्तीय सुरक्षा की भावना बढ़ी। इन देशों ~~के लिए~~ अधिकांश लोगो के लिए भुखमरी तथा गरीबी कल्पना या पढ़ने की वस्तु रही।

किन्डलबर्गर ने रोस्टोव द्वारा प्रतिपादित इन अवस्थाओं को विश्लेषण S वक्र की सहायता से किया जो आर्थिक विकास शुरु में धीरे-धीरे बाद में तेजी आती हैं, और अंत में गति में कमी आने के पूर्व इसमें बहुत तेजी से वृद्धि होती हैं।

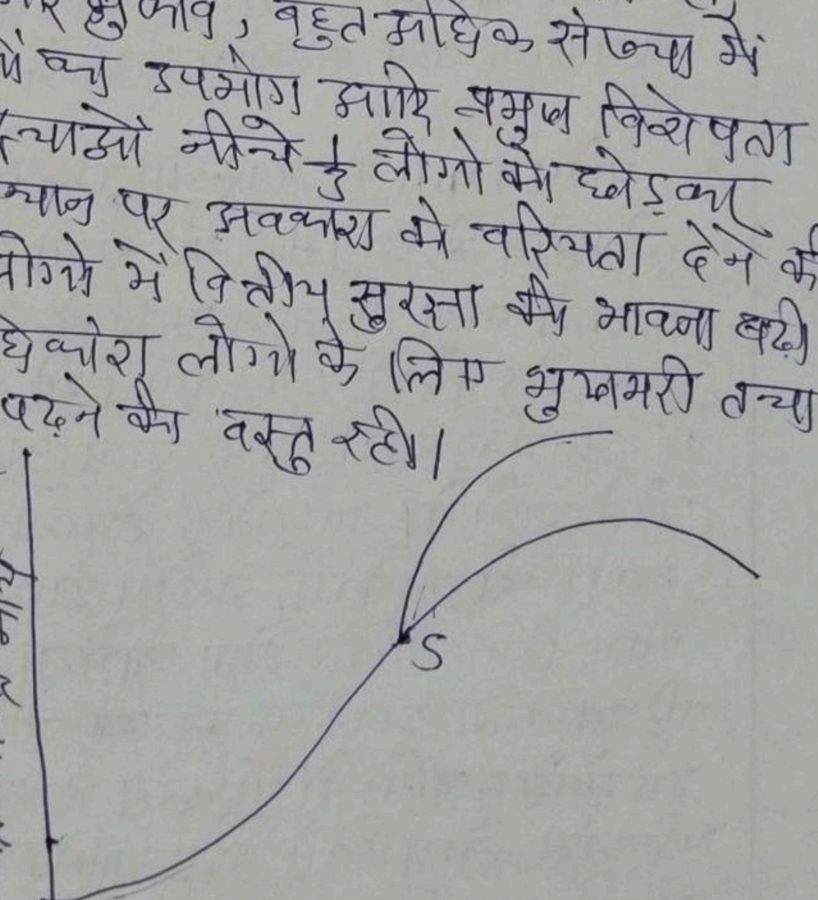

45

भारत में जनसंख्या को नियन्त्रण करने के उपाय समझाइए।

जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी लाना तथा उसका नियन्त्रण जनसंख्या नीति के विभिन्न क्षेत्रों में से एक है जिनके द्वारा किसी देश में जनसंख्या नियन्त्रण की जा सकती है ये वे उपाय हैं जिनको विभिन्न जनसंख्या आधिक्य वाले देशों जैसे चीन, श्रीलंका, मलेशिया आदि में प्रयोग लाया गया -

1 शिक्षा का विस्तार :- शिक्षा का विस्तार परिवार विवाह, परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता पैदा करने वाला अकेला कारक है शिक्षा का विस्तार जहां एक ओर लोगो में व्याप्त सामाजिक तथा धार्मिक अवरोध को दूर करेगा वहीं लड़कियो में रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करेगा, शिक्षा लोगो की सोच को विस्तृत करती है। यह शहरी एवं ग्रामीण दोनो क्षेत्रो में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो में जागरूकता पैदा करता है।

2 समाज में महिला या लिंग भेद को दूर करना -
समाज महिला के प्रति चेतना पैदा करके लिंग भेद को दूर किया जा सकता है संविधान में महिला एवं पुरुष को समान अधिकार प्रदान किया है महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक व्यवस्थाए की गयी हैं। सरकार द्वारा महिलाओं से सम्बन्धित विविध कार्यक्रम चलाया जा रहा है

3 औद्योगिकरण को बढ़ावा एवं कृषि क्षेत्र का यन्त्रीकरण :- कृषि क्षेत्र का यन्त्रीकरण तथा देश में औद्योगिकरण परिवार के आकार के सम्बन्ध में लोगो के विचार में परिवर्तन लाता है।

4 रोजगार तथा आय में वृद्धि तथा गरीबी में कमी - गरीबी तथा आय में कमी की स्थिति में परिवार के आकार में वृद्धि होती है इसके लिए रोजगार के नए अवसर सृजित किया जाय

5 नगरीकरण का विस्तार - नगरी करण जितना ही अधिक होगा आवास की व्यवस्था, बच्चो की शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदि बहुत महंगी होती जाती है इसलिए लोग छोटा परिवार रखने के लिए बाध्य होगे।

6 परिवार नियोजन - परिवार नियोजन में परिवार के आकार को नियोजित रूप से कम रखने के उपाय करना, इनमें अधिक उम्र में विवाह करना, गर्भ निरोधकों का प्रयोग आदि करके परिवार के आकार को छोटा किया जा सकता है।

(46)

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर प्रकाश डालिए / FDI (FDI)
[Highlight the foreign Direct Investment]

FDI भारत में आर्थिक विकास के वित्तीयन का एक और उत्तम वित्तीय संसाधन है इससे आर्थिक विकास की फंडिंग होती है देश को आर्थिक विकास के लिए अतिरिक्त पूंजी प्राप्त होती है पर देश की देयता में वृद्धि नहीं होती है प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से आशय विदेशी कंपनियों द्वारा एक देशी कम्पनी में भौतिक पूंजी सम्पत्तियों प्लांट मशीनरी, भूमि, भवन, इन्वेन्ट्री, आदि में निवेश करने से है। इसके अन्तर्गत विदेशी कंपनी दूसरे देश में नयी कंपनी विकसित करती है या अपनी सहायक कंपनी को खोलती है जिसमें दोनों ही नियन्त्रण तथा प्रबन्धन बना रहता है। इसमें निवेशित पूंजी के प्रयोग पर निवेशक का नियन्त्रण बना रहता है प्रत्यक्ष विदेशी निवेश(FDI) से घरेलू देश में भौतिक पूंजी निर्माण होगा जिसका अनुकूल प्रभाव उत्पादन, आय तथा रोजगार पर होगा। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश दीर्घकालिक स्वभाव के होते तथा इनके साथ पूंजी पलायन का भय नहीं रहता है। विदेशी निवेश का अन्तर्प्रवाह FDI नीति द्वारा निर्देशित होता है विदेशी निवेश नीति डिपार्टमेन्ट आफ इन्डस्ट्रियल पालिसी एण्ड प्रमोशन, वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय द्वारा तैयार तथा घोषित होता है। प्रत्यक्ष विदेशी नीति चालू खाता घाटा (CAD) के वित्तीय का सबसे उत्तम तरीका है क्योंकि इसके कारण जनित विदेशी विनिमय प्रवाह घाटा पूरा करने में सहायक होता है पर दूसरी ओर इसमें भी महत्वपूर्ण यह है कि इसके साथ विदेशी मुद्रा आधुनिक टेक्नालाजी भी आती है।

विदेशी संस्थागत निवेशक पर व्याख्या कीजिए
(Explain the foreign Institutional Investor)
FII

विदेशी संस्थागत निवेशक को र भारत के संदर्भ में बाहरी कम्पनियों तथा संस्थाओं के रूप में लिया जाता हैं जो भारत के वित्तीय बाजार में प्राइमरी तथा सेकेन्डरी बाजार में निवेश करते हैं इसमें हेजफण्ड, बीमा कम्पनी, पेंशन फण्ड, म्यूचुअल फण्ड आदि को सम्मिलित करते हैं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थागत निवेशको को वित्तीय बाजार में भाग लेने के लिए सेबी से पंजीकृत होना आवश्यक है। सेबी भारतीय कंपनियों में इनकी भागीदारी की सीमा निर्धारित करती है। सितम्बर 1992 में FII को भारतीय पूंजी बाजार में भाग लेने के लिए स्वतन्त्र किया गया स्टॉक मार्केट में उच्चावचन (उतार-चढ़ाव) तथा तीव्र संवेदनशीलता के लिए बहुत अधिक सीमा तक FII द्वारा स्टाक एक्सचेंज में प्रत्यक्ष भागीदारी जिम्मेदार हैं। FII एक वित्तीय निवेश होता हैं जो अर्थव्यवस्था में चालू खाते के घाटे को वित्त पोषण करते हैं। FII निवेश अल्पकालीक स्वभाव का निवेश हैं जिसमें निवेशक अन्य देशो के सापेक्ष गन्तव्य देश की आर्थिक, वित्तीय, राजकोषीय तथा राजनैतिक स्थिरता के अलावा आर्थिक वृद्धि की स्थिति तथा पूंजीगत लाभ की सम्भावना से बहुत अधिक प्रेरित होता हैं।

बहु राष्ट्रीय निगम का अर्थ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान —

बहुराष्ट्रीय निगम उन बड़ी-बड़ी फर्मों को कहते हैं जिनका मुख्यालय किसी एक राष्ट्र में है तथा उनकी व्यापारिक गतिविधियां अनेक राष्ट्रों चल रही हैं ऐसे फर्मों को अन्तर्राष्ट्रीय निगम या बहुराष्ट्रीय कम्पनी कहते हैं।

डेविड ई० लिलिन्टेल के शब्दों में "बहुराष्ट्रीय निगम का मुख्यालय किसी एक देश में होता है परन्तु वह अन्य राष्ट्रों में उनके नियमो व परम्पराओं के अनुरूप रहकर कार्य करते हैं।"

इन निगमों की गतिविधियां एक राष्ट्र में सीमित न होकर अनेक राष्ट्रों में चलती हैं अपने देश में ये निगम अपना मुख्यालय रखते हैं तथा अन्य देशों में शाखाएं या सहायक कंपनियां रखते हैं। नये निवेश तथा स्थानीय उद्देश्यों से सम्बंधित निर्णय निगम के मुख्यालय से लिए जाते हैं।

भारत में अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां कार्यरत हैं जो देश के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराती हैं इनमें कैडबरी, पामोलिव, एप्पल, विवो, सुजुकी मोटर, वालमार्ट, टोयोटा मोटर्स, अमेजॉन, फ्लिपकार्ट, गूगल, नेस्टल, माइक्रोसॉफ्ट

भारत जैसे विकासशील देश प्रायः पूंजी तथा तकनीक की कमी का सामना करते हैं यह इस कमी को दूर करने में MNC बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यहां पर श्रम का अधिक प्रयोग कर उत्पादन किया जाता है और एक व वृहद बाजार मिल जाता है।

३

सतत विकास के लक्ष्य क्या हैं: (49)

what is Sustainable Development Goals

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सितम्बर 2015 में स्वीकार किये गये।17 सतत विकास लक्ष्यों को निर्धारित किया गया हैं सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में विभिन्न देशो की स्थिति के मूल्यांकन के लिए सतत विकास सूचकांको की गणना संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा की जाती है जो UNO की सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट में प्रति वर्ष जारी किये जाते है 0-100 मान वाला यह सूचकांक यह प्रदर्शित करता हैं कि सम्बंधित देश ने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कितने प्रतिशत प्रगति की हैं किसी देश के लिए इस सूचकांक का मान 100 यह दर्शाता कि उसने यह 17 लक्ष्य प्राप्त करने में शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त कर ली हैं. शून्य यह दर्शाता है कि अभी लक्ष्य प्राप्त करने में कितना पिछे हैं। प्रमुख लक्ष्य इस प्रकार है

1- निर्धनता निवारण
2 शून्य भूख
3 उत्तम स्वास्थ्य एवं कल्याण
4 बेहतर शिक्षा
5 लैंगिक असमानता
6 स्वच्छ जल एवं स्वच्छता
7 आर्थिक पहुंच के भीतर एवं उ स्वच्छ ऊर्जा
8 शालीन कार्य एवं आर्थिक वृद्धि
9 उद्योग, नवप्रवर्तन व आधारिक संरचना
10 असमानता में कमी
11- सतत शहर एवं समुदाय
12 उत्तरदायी उपभोग एवं समुदाय
13- जलवायु कार्रवाही
14 जल के नीचे जीवन
15- धरती पर जीवन
16 - शांति, न्याय एवं मजबूत संस्थाए।
17 लक्ष्यो के लिए भागीदारियां

किसी भी देश के लिए इन प्रमुख लक्ष्यो की प्राप्ति से यह मालुम किया जा सकता है वह देश कितना सजग हैं जो देश के प्रगतिपथ पर चलने में सहायक होता हैं।

(50)

हिक्स की तटस्थता वक्र को स्पष्ट कीजिए।

Explain the Hicks view about Neutrality

प्रो० हिक्स के अनुसार एक आविष्कार तब तटस्था कहा जाता है जब वह श्रम तथा पूंजी की सीमान्त उत्पादकता की समान अनुपात में वृद्धि करती है अन्य शब्दों में एक तकनीकी प्रगति अथवा परिवर्तन तटस्थ तब रहता है जब एक स्थिर श्रम पूंजी-श्रम अनुपात पर श्रम के साथ पूंजी के सीमान्त उत्पादन का अनुपात अपरिवर्तित रहता है।

एक तकनीकी परिवर्तन श्रम बचत कारी तब कहा जाता है जब वह एक स्थिर पूंजी-श्रम अनुपात पर श्रम की अपेक्षा पूंजी के सीमान्त उत्पादन को बढ़ा देता है। हिक्स ने तकनीकी परिवर्तन को भिन्न उत्पादन फलन की तुलना करते हुए प्रदर्शित किया है।

x अक्ष पर पूंजी श्रम अनुपात pq

y अक्ष पर प्रति श्रमिक उत्पादन q दर्शाया गया है

$q = \frac{Q}{L}$ Q = उत्पादन, L = श्रम

अथवा L अक्ष पर

$K = \frac{K}{L}$ जहां तथा L भौतिक इकाईयां पूंजी श्रम अनुपात है चित्र में OQ श्रम तथा पूंजी के सीमान्त उत्पादन को मापता है OP तकनीकी परिवर्तन से पूर्व उत्पादन फलन OP_1 तकनीकी परिवर्तन के बाद का उत्पादन फलन है

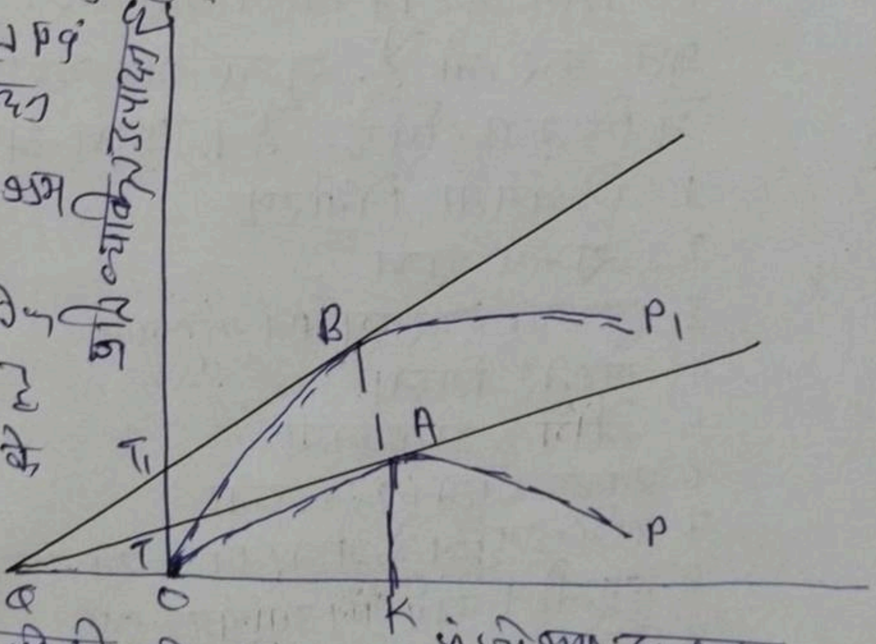

हिक्स का तटस्थ तकनीकी प्रगति परिवर्तन यह बताता है कि यदि तकनीकी फलन ऊपर की ओर OP से OP_1 की ओर खिसक जाता है तो दोनों सीमान्त उत्पादनों का अनुपात अवश्य ही आधार अक्ष के किसी भी y अक्ष पर ठीक वही होना चाहिए जैसा KB है।